म्यूचुअल फंड्स की

TAURUS
Mutual Fund

की ओर से निवेशकों को शिक्षित करने की पहल

Many *small* parts can make a whole.

INVEST THAT MONEY TO REACH YOUR BIG GOAL.

An Investor Education and Awareness Initiative by Taurus Mutual Fund

TAURUS
Mutual Fund

Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully

म्यूचुअल फंड्स की

TAURUS
Mutual Fund

की ओर से निवेशकों को शिक्षित करने की पहल

SYSTEMATIC INVESTMENT PLAN (SIP)

Little by little, it can build up to a whole lot more. It all depends on fitting the small parts together with the right plan. SIP allows you to put aside fixed amounts at regular intervals over a pre-set term.

By cashing in on the power of compounding over a period, it rewards you for your disciplined & responsible approach.

Benefits of Systematic Investment Plan (SIP)

Allows you to invest small fixed sum of money at regular intervals - light on the wallet

SIP makes volatility work in your favour - reduces risk

Benefit of Rupee Cost Averaging - get more units at lower NAV, less units at higher NAV

Power of compounding comes into play - the early you start higher are the returns

Imparts time - tested discipline to investing - key to financial success

An Investor Education and Awareness Initiative by Taurus Mutual Fund

TAURUS Mutual Fund

Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully

सारणी

01	परिचय	3
02	म्यूचुअल फंड का कामकाज	9
03	आपकी जरूरत के लिए म्यूचुअल फंड्स	21
04	म्यूचुअल फंड कैसे खरीदें	41
05	निवेश को ट्रैक करना	53
06	आपका पहला फंड	63

डिस्क्लेमर: यहां दी गई जानकारी केवल आपके संज्ञान के लिए हैं और इसे किसी भी तरह से टॉरस म्यूचुअल फंड की किसी भी योजना की यूनिट्स में खरीद अथवा बिक्री की सलाह के रूप में नही लिया जाना चाहिए। इस पुस्तिका में दी गई जानकारी वैल्यू रिसर्च द्वारा दी गई है और किसी भी सूचना की संपूर्णता या उसके सही होने के लिए फंड जिम्मेदार नहीं है। यहां दिए गए विचारों के आधार पर किसी के द्वारा किए गए किसी भी कार्य के लिए टॉरस एएमसी/टॉरस म्यूचुअल फंड की जिम्मेदारी नहीं होगी

Disclaimer: Any information contained herein is for informational purpose only and does not constitute advice or offer to sell/purchase units of the schemes of Taurus Mutual Fund. Information gathered and provided in this booklet has been provided by Value Research and the Fund does not warrant the accuracy and/or completeness of any information. Taurus AMC/Taurus MF disclaims any liability for action taken by anyone on the basis of the opinions contained herein.

वैल्यू रिसर्च का उद्देश्य आपको सही सूचना पहुंचाना और निवेश के स्मार्ट फैसले लेने में मदद करना है

1992 से वैल्यू रिसर्च ने म्यूचुअल फंड रिसर्च की शुरुआत की। आज दो दशकों से ये स्वतंत्र रूप से निवेश पर शोध कर रहा है। हमारी विश्वसनीय और सटीक जानकारी की पहचान की वजह से हमारे विचारों और आंकड़ों को मीडिया में व्यापक जगह मिली है। भारत में ''स्रोत: वैल्यू रिसर्च'' का सबसे व्यापक इस्तेमाल किया जाता है।

वैल्यू रिसर्च की निवेशकों के एक बड़े वर्ग तक पहुंच है। हमारे अपने मीडिया उत्पाद हैं जिनमें दो मासिक मैग्ज़ीन - म्यूचुअल फंड इनसाइट और वेल्थ इनसाइट और ValueResearchOnline.com नाम की वेबसाइट शामिल है। ये भारत की निवेश पर अग्रणी वेबसाइट्स में शामिल है। सटीक निवेश के आंकड़ों और सबसे उन्नत पोर्टफोलियो ट्रैकर जैसी सेवाएं इस वेबसाइट की लोकप्रियता की धुरी हैं।

म्यूचुअल फंड रैकिंग: भारतीय निवेशक वैल्यू रिसर्च की 5 स्टार रेटिंग को अच्छे फंड के सबसे विश्वसनीय चिन्ह के रूप में देखते हैं ।

हमारा नजरिया: 'निवेशक सबसे पहले' यही नजरिया हमारे कारोबार को परिभाषित करता है और हमारी शुद्ध निष्पक्षता की प्रसिद्धि का आधार है। अगर हमें लगता है कि कोई फंड निवेशकों की जरूरत पर खरा नहीं उतरता तो हम उस फंड के बारे में नकारात्मक विचार प्रकट करने में नहीं हिचकते। हमारा स्वतंत्र होना ही हमारे द्वारा दी गई जानकारी की ईमानदारी के लिए सबसे जरूरी चीज है। हम फंड कंपनियों के रिसर्च और उनके फंड रेटिंग के लिए कोई शुल्क नहीं लेते। अपने आंकड़ों, विवेचना और रेटिंग आदि के लिए हम एक खुली और लिखित प्रणाली का इस्तेमाल करते हैं। इस बुकलेट में दी गई अवधारणाएं और विषयवस्तु पर वैल्यू रिसर्च द्वारा काम किया गया है।

विज्ञापन

अध्याय
1

परिचय

म्यूचुअल फंड बड़ी संख्या में निवेशकों की बचत को इकठ्ठा करके इसे पैसे के एक ही पूल के तौर पर प्रबंधन करते हैं। निवेशकों को इस बात की चिन्ता नहीं करनी होती कि वे किस शेयर, बॉन्ड अथवा कमोडिटी में निवेश करें बल्कि प्रोफेशनल फंड प्रबंधक, ये काम उनके लिए करते हैं। म्यूचुअल फंड्स म्यूचुअल फंड कंपनियों द्वारा चलाए जाते हैं जिन्हें एसेट मैनेजमेंट कंपनी (एएमसी) कहते हैं। हर एएमसी कई तरह की फंड योजनाएं चलाती हैं जो अलग-अलग जरूरतों के लिए उपयुक्त होती हैं।

एक व्यक्तिगत निवेशक के लिए जिसके पास निवेश के बारे में पढ़ने अथवा शोध के लिए वक्त नहीं है, म्यूचुअल फंड कम मेहनत में विविधता वाले निवेश का फायदा पाने के लिए सबसे उपयुक्त विकल्प हैं। ज्यादातर फंड्स में आप कुछ हजार रुपयों से निवेश की शुरुआत कर सकते हैं। इसके साथ ही, निवेश के दूसरे विकल्पों के विपरीत, म्यूचुअल फंड निवेश (ओपन एंडेड योजनाएं) ज्यादा लिक्विड है यानी आप अपना पैसा किसी भी वक्त वापिस ले सकते हैं।

म्यूचुअल फंड में निवेश करने का फायदा ये है कि ये आप जैसे व्यक्तिगत निवेशकों को कई तरह के कंपनियों और प्रपत्रों (इन्स्ट्रूमेंन्ट्स) जैसे शेयर, बॉन्ड्स में निवेश का मौका देता है। इसके साथ ही आप काफी

कम कीमत में दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी निवेश कर सकते हैं जिसमें खुद निवेश करना आपके लिए मंहगा साबित हो सकता है। मोटे तौर पर म्यूचुअल फंड निवेश से पैसे कमाने के दो तरीके हैं। पहला आप म्यूचुअल फंड्स द्वारा घोषित लाभांश के द्वारा आय अर्जित कीजिए या फिर फंड योजना की यूनिटों की कीमत बढ़ने के बाद बेचकर लाभ कमाइए।

तो म्यूचुअल फंड में निवेश क्यों किया जाए?

शेयर अथवा बॉन्ड्स में सीधे निवेश करने के बजाय म्यूचुअल फंड में निवेश से कीमत के मोर्चे पर फायदे के अलावा दूसरे भी कई फायदे हैं।

आसानी: म्यूचुअल फंड में करीब-करीब हर कोई निवेश कर सकता है क्योंकि इनमें निवेश की शुरुआत 1000 रुपए से हो जाती है जो कई लोगों की पहुंच में है। इसी तरह से आप आसानी से कोई भी राशि निवेश कर सकते हैं और अपनी पसंद से निकाल भी सकते हैं। आप एक साधारण सा फार्म भरकर अथवा ऑनलाइन जाकर निवेश की शुरुआत कर सकते हैं और आप सीधे अपने बैंक अकाउंट से, निवेश के लिए राशि भेज सकते हैं। इसी तरह से रिडेम्पशन (फंड यूनिटें बेचना) के जरिए आपका पैसा सीधे आपके बैंक अकाउंट में आ जाता है जिसमें 3 से 10 दिनों से ज्यादा वक्त नहीं लगता। इसके बजाय अगर आप सीधे अलग-अलग कंपनियों के शेयर खरीद कर एक व्यापक (विविध) सेट बनाते हैं तो इसके लिए आपको काफी पैसे की जरूरत होगी। लेकिन म्यूचुअल फंड के जरिए आप काफी कम कीमत में अलग-अलग शेयरों का सेट तैयार कर सकते हैं। और क्या चाहिए... आप थोड़ा-थोड़ा करके निवेश कर सकते हैं अथवा निवेश निकाल सकते हैं।

शीघ्र और आसान विविधीकरण: सुरक्षित निवेश का आधार यही है कि आप अपने पैसे को अलग-अलग निवेशित रखें। आधुनिक पोर्टफोलियो

दूसरे कई निवेश से विपरीत म्यूचुअल फंड्स में निवेश काफी तरल होता है और बिना किसी विलम्ब के निवेश की निकासी की जा सकती है

सिद्धान्त कहता है कि अगर आपका निवेश कई सिक्योरिटीज में लगता है तो आपका जोखिम काफी कम हो जाता है।

म्यूचुअल फंड ऐसा करने का काफी सरल तरीका है। हर फंड, पैसे को कई जगह पर निवेशित रखता है। एक औसत निवेशक की तुलना में म्यूचुअल फंड आसानी से विविधीकरण कर लेते हैं जैसा कि आम निवेशक नहीं कर पाते। 1000 रुपए के निवेश के जरिए आप म्यूचुअल फंड की मदद से आप भारत की सर्वोच्च कंपनियों में निवेश कर सकते हैं जो कि एक व्यक्तिगत निवेशक के तौर पर आपके लिए कर पाना संभव नहीं है।

प्रोफेशनल शोध और निवेश प्रबंधनः निवेश करना काफी बड़ा काम है। सैकड़ों कंपनियों को ट्रैक करना पड़ता है और उनका भविष्य बिना किसी चेतावनी के बदल सकता है। शायद आप ऐसा कर सकते हैं लेकिन हो सकता है कि इसके लिए आपके पास पैसे और वक्त नही हो। एक औसत निवेशक के लिए ये फैसला लेना काफी मुश्किल हो सकता है कि किस कंपनी में निवेश किया जाए, कितना खरीदा जाए और कब बेचा जाए।

लेकिन जब आप म्यूचुअल फंड खरीदते हैं आप एक प्रोफेशनल फंड मैनेजर को अपना पैसा प्रबंधन के लिए देते हैं। यह व्यक्ति इस बात का फैसला करता है कि आपके लिए क्या खरीदा जाए, कब खरीदा जाए और इसे कब बेचा जाए। शेयर अथवा बॉन्ड्स खरीदने से पहले कंपनी, उद्योग, अर्थव्यवस्था आदि पर काफी शोध करके फंड मैनजर इन बातों का फैसला लेता है। ज्यादातर म्यूचुअल फंड कंपनियां इस सेवा के लिए छोटी सी फीस वसूलती हैं जिसे फंड प्रबंधन फीस कहा जाता है जो किसी फंड में निवेश करने वालों के द्वारा साझा की जाती है।

तरलताः बचत के दूसरे तरीकों जैसे पब्लिक प्राविडेंट फंड (पीपीएफ) या नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) से विपरीत आप म्यूचुअल फंड्स से अपना पैसा तुरंत निकाल सकते हैं जो इन्हें काफी तरल (लिक्विड) बनाता है।

आपके बैंक अकाउंट में सीधे रिडेम्पशन (यूनिटों की बिकवाली) की राशि जमा की जा सकती है जो 3 से 10 दिनों से ज्यादा का वक्त नहीं लेता है

सेबी के नियमों के मुताबिक सभी म्यूचुअल फंड्स के लिए तरलता प्रदान करना जरूरी है। लेकिन ये तरलता दूसरे तरह की है जो इस बात पर निर्भर करती है कि फंड ओपन एंडेड है अथवा क्लोज़्ड एंडेड। ओपन एंडेड फंड्स लगातार चलने वाले फंड्स हैं जिसमें आप एसेट मैनेजमेंट कंपनी के जरिए निवेश और निकासी दोनो ही कर सकते हैं। ओपन एंडेड फंड्स के मामले में एएमसी खुद ही एनएवी आधारित बिक्री की कीमत पर आपका पैसा 3 से 10 दिनों के भीतर लौटा देती है।

क्लोज़्ड एंडेड फंड्स को निर्धारित वक्त के लिए लॉन्च किया जाता है और आप इस शुरुआती ऑफर के दौरान ही इनमें निवेश कर सकते हैं। क्लोज़्ड एंडेड फंड्स के लिए एएमसी इन फंड्स को स्टॉक एक्सचेंज पर लिस्ट कराते हैं जिससे आप अपने स्टॉक ब्रोकर के जरिए किसी शेयर की ही तरह अपनी यूनिटें बेच सकते हैं। लेकिन ये विकल्प उत्तम नहीं है क्योंकि फंड की स्टॉक एक्सचेंज पर कीमत एनएवी से काफी कम होती है। व्यवहार में आपको क्लोज़्ड एंडेड फंड्स में अपना पैसा पूरे वक्त के लिए निवेशित रखना चाहिए।

फंड्स की एक अन्य श्रेणी भी है जिन्हें इक्विटी लिंक्ड सेविंग स्कीम कहा जाता है जहां पर निवेश 3 सालों के लिए लॉक हो जाता है। ये फंड आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत आपका टैक्स बचाते हैं, लेकिन आप कानूनन इन फंड्स से तीन सालों तक पैसा नहीं निकाल सकते। इसके साथ ही इन फंड्स में आप एक वित्तीय वर्ष में 1 लाख रुपए से ज्यादा निवेश नहीं कर सकते।

विविधता: हर तरह के रिटर्न और जोखिम के लिहाज से हर समयावधि के लिए आपको म्यूचुअल फंड्स मिल जाएंगे। आप चाहे जिस तरह का निवेश करना चाहें, आपके अनुसार आपको कई तरह के फंड्स मिल जाएंगे।

टैक्स कुशलता: म्यूचुअल फंड्स की बनावट ही ऐसी है जो निवेश को

ईएलएसएस में तीन सालों की लॉक इन अवधि होती है जो किसी भी वित्तीय वर्ष में 1 लाख रुपए तक के निवेश पर कर की बचत करते हैं

अनोखे फायदे

कई तरह के निवेश ऐसे हैं जो आप सिर्फ म्यूचुअल फंड्स के जरिए ही कर सकते हैं। और कुछ तरीके तो बेहद आसान हैं ।

सरकारी सिक्योरिटीज: व्यक्तिगत तौर पर कोई सरकारी बॉन्ड्स में निवेश नहीं कर सकता लेकिन वे म्यूचुअल फंड्स खरीद सकते हैं जो बॉन्ड्स में निवेश करते हैं।

विदेशी शेयर: हममें से ज्यादातर लोगों के लिए विदेश में शेयरों की खरीद के लिए ब्रोकरेज अकाउंट खोलना अत्यंत दुष्कर कार्य है। लेकिन आप अंतरराष्ट्रीय फंड्स में निवेश के जरिए आसानी से ये काम कर सकते हैं।

आसान बना देती है और अगर आप इसका स्मार्ट तरीके से इस्तेमाल करें तो टैक्स समायोजन के मामले में भी ये निवेशकों पर कोई भार नहीं डालते। उदाहरण के लिए जब भी आप किसी निवेश में खरीद या बिक्री करते हैं तो आपको मुनाफे पर टैक्स चुकाना होता है। लेकिन जब आपकी ओर से म्यूचुअल फंड खरीद बिक्री करते हैं तो ऐसा नहीं होता।

बेहतरीन मुनाफे के लिए फंड मैनेजर जरूरत के मुताबिक ही शेयरों की खरीद-बिक्री करते हैं लेकिन आपको उसी वक्त टैक्स चुकाना होता है जब आप फंड्स से अपना निवेश निकाल रहे होते हैं। उदाहरण के तौर पर इक्विटी फंड्स के मामले में एक साल के बाद निवेश की निकासी पर कोई कर नहीं देना होता है क्योंकि लंबी अवधि में कैपिटल गेन टैक्स नहीं लगता। इसी तरह से इक्विटी फंड्स द्वारा दिया गया लाभांश निवेशकों के हाथ में बिल्कुल टैक्स फ्री होता है। हालांकि डेट फंड्स द्वारा दिया गया लाभांश भी निवेशकों के हाथ में टैक्स फ्री जरूर होता है लेकिन फंड्स अथवा योजना को अपनी तरफ से डिविडेंड डिस्ट्रीब्यूशन टैक्स देना पड़ता है।

! कुछ म्यूचुअल फंड्स ऐसे हैं जो आमतौर पर दुर्लभ एसेट क्लास में निवेश करते हैं जो इन्हें निवेश का एक अनोखा माध्यम बना देता है

पारदर्शी और बेहतरीन विनियमित उद्योग: म्यूचुअल फंड्स को कानूनी तौर पर अपने कामकाज और निवेश के बारे में वृहद् आंकड़े जारी करने होते हैं। तकरीबन सभी फंड्स रोजाना एनएवी जारी करते हैं और हर माह अपना पूरा पोर्टफोलियो भी जारी करते हैं। सेबी फंड उद्योग का काफी कड़ाई से रेगुलेशन करता है और निवेशकों को बेहतर सुरक्षा देने के नियमों में लगातार सुधार करता रहता है।

जैसा कि आप उम्मीद कर सकते हैं कि जो फंड इक्विटी यानी शेयरों में निवेश करते हैं वहां संभावित रिटर्न और जोखिम सबसे ज्यादा होता है। दूसरे छोर पर वो फंड्स होते हैं जो लघु अवधि के बॉन्ड्स और डिपॉजिट्स में निवेश करते हैं जो बैंक जमा पर मिलने वाले रिटर्न के आस पास ही रिटर्न देते हैं और निवेश को सुरक्षा प्रदान करते हैं।

इसके अलावा फंड्स की गुणवत्ता को लेकर भी विविधता काफी ज्यादा है। इसका मतलब ये हुआ कि सभी फंड्स में वायदे के मुताबिक प्रदर्शन की क्षमता नहीं होती और इसीलिए निवेशकों को खास फंड्स के ऐतिहासिक प्रदर्शन और निवेश के वक्त, फंड मैनेजर और एसेट मैनेजमेंट कंपनी पर नजर बनाए रखना जरूरी होता है।

अध्याय
2

म्यूचुअल फंड्स का कामकाज

म्यूचुअल फंड्स की उत्पत्ति के पीछे एक प्रायोजक (स्पॉन्सर) होता है जो म्यूचुअल फंड को शुरु करने का जिम्मा उठाता है। म्यूचुअल फंड्स में दूसरे हिस्सेदार भी होते हैं जैसे बोर्ड ऑफ ट्रस्टी, एक एसेट मैनेजमेंट कंपनी और यूनिट धारक जो म्यूचुअल फंड्स के निवेशक होते हैं।

प्रायोजक एएमसी का शेयरधारक होता है और सेबी के नियमों के मुताबिक एएमसी का वास्तविक नियंत्रण बोर्ड ऑफ ट्रस्टी के हाथों में होता है जो प्रबंध निकाय के तौर पर काम करता है।

यही वजह है कि ज्यादातर ट्रस्टी स्वतंत्र होते हैं जबकि प्रायोजक अपना नॉमिनी तय कर सकता है। इसके साथ ही मैनेजमेंट फीस की अधिकतम सीमा भी तय होती है और दूसरे खर्चों की सीमा भी सेबी द्वारा तय की जाती है।

सेबी के नियम म्यूचुअल फंड्स के कामकाज की रूपरेखा तय करते हैं और प्रबंधन शुल्क और दूसरे तमाम खर्चों की सीमा भी तय करते हैं। सेबी एएमसी के कामकाज और नीतियों के कई दूसरे पक्षों का भी रेगुलेशन करता है।

निवेश का लक्ष्य

एसेट मैनेजमेंट कंपनी (एएमसी) कई तरह की फंड योजनाएं प्रदान करती

है। इन योजनाओं को एक दूसरे से अलग देखने का एक तरीका ये है कि आप इनके निवेश के लक्ष्यों पर निगाह डालें। सरल भाषा में कहें तो निवेश का लक्ष्य फंड योजना के उस वित्तीय लक्ष्य की ओर इशारा करता है जिसे वो हासिल करना चाहता है।

उदाहरण के तौर पर कुछ फंड्स अच्छी तरह से जमी हुई बड़ी कंपनियों में निवेश करते हैं या फिर उन कंपनियों में जो नियमित तौर पर लाभांश देती हैं। कुछ फंड्स केवल गिल्ट्स (बॉन्ड्स) में निवेश करते हैं और कुछ अंतरराष्ट्रीय बाजारों में। हालांकि म्यूचुअल फंड्स तय निवेश के लक्ष्य के साथ लॉन्च किए जाते हैं लेकिन वक्त बदलने के साथ फंड्स इन लक्ष्यों में परिवर्तन कर सकते हैं, पर इससे पहले निवेशकों को इसकी सूचना देनी पड़ती है।

एनएवी क्या है?

किसी फंड का एनएवी और निवेशकों के पास यूनिटों की संख्या ऐसे आंकड़े हैं जो सबसे कम उपयोगी हैं, सबसे ज्यादा गलत समझे गए हैं और इन्हें जरूरत से ज्यादा महत्त्व दिया जाता है। एक म्यूचुअल फंड इसके निवेशकों द्वारा सामूहिक रूप से किए गए निवेशित धन से बनता है। इसे एक उदाहरण से समझते हैं - एक फंड लॉन्च किया जाता है, इसमें 1000 निवेशकों ने 10-10 हजार रुपए लगाए हैं। तो कुल मिलाकर फंड के पास प्रबंधन के लिए 1 करोड़ रुपए हैं। केवल सुविधा के लिहाज से एक फंड को कुछ वैल्यू के आधार पर यूनिटों में बांटा जाता है और शुरुआत में ये एक पूर्णांक होता है। आमतौर पर ये अंक होता है - 10 रुपए। तो ऊपर के फंड में सभी निवेशकों के पास 1000 यूनिटें हैं और फंड ने कुल मिलाकर 10 लाख यूनिटें जारी की हैं।

सामान्य तौर पर - एनएवी फंड की प्रत्येक युनिट की वर्तमान वैल्यू होती है। इस उदाहरण में फंड मैनेजर ने 1 करोड़ रुपए की परिसंपत्ति अलग-अलग

! **फंड का निवेश उद्देश्य निवेशकों को उनकी जरूरत और जोखिम लेने की क्षमता के आधार पर फंड योजना के चयन में मदद करना है**

इन्ट्रूमेंट्स जैसे कि स्टॉक अथवा बॉन्ड्स में निवेश की। शुरुआत में एनएवी था 10 रुपए यानी एक यूनिट की कीमत थी 10 रुपए।

मान लेते हैं कि एक साल के बाद इसी निवेश ने अच्छा प्रदर्शन किया और 1 करोड़ रुपए बढ़कर 1.1 करोड़ रुपए हो गए। अब प्रत्येक यूनिट का एनएवी हो गया है 11 (1.1 करोड़ को 10 लाख यूनिटों से भाग देने पर)। हर निवेशक के पास अब 1000 यूनिटें हैं और निवेश की कुल कीमत बढ़कर 11,000 रुपए हो गई है। यहां पर सिर्फ ये समझना आवश्यक है कि कुल परिसंपत्ति में 10 फीसदी का इजाफा हुआ है और इसलिए निवेशक को 10 फीसदी का मुनाफा हुआ है। अगर फंड की शुरुआती कीमत 100 रुपए होती तो अब एनएवी 110 रुपए हो गया होता और अगर फेस वैल्यू 1 रुपए होती तो एनएवी 1.10 रुपए होता। तो इस आधार पर एनएवी में कितना फीसदी इजाफा हुआ ये अहम है और वास्तविक संख्या के कोई खास मायने नहीं हैं।

जब भी निवेशक को अपना पैसा लगाना होता है अथवा इसे भुनाना होता है तो वो नई यूनिटें खरीदता है या फिर उस वक्त की एनएवी पर यूनिटों को बेचता है। कुछ परिस्थितियों में यूनिटों को भुनाने के वक्त, खर्च थोड़ा ज्यादा हो सकता है। कुछ फंड्स किसी भी वक्त निवेश करने और निवेश की निकासी की छूट देते हैं जबकि कुछ फंड्स केवल उस वक्त प्रवेश की अनुमति देते हैं जब फंड लॉन्च किया जाता है और पहले से तय अवधि के बाद जब फंड समाप्त हो जाता है, तभी निवेशक अपना पैसा बाहर निकाल सकते हैं।

चार्जेज, फीस, खर्चे और दूसरी लागतें

म्यूचुअल फंड कंपनी जो सेवाएं प्रदान करती है उसके लिए वो निवेशकों से शुल्क और लागत वसूलती है।

एनएवी बदलते रहने वाली चीज है जो किसी भी वक्त (किसी भी दिन) प्रत्येक यूनिट की वर्तमान कीमत होती है

फंड्स का वर्गीकरण

भारत में सैकड़ों तरह के म्यूचुअल फंड्स हैं। अगर आप व्यक्तिगत तौर पर हर एक फंड के निवेश के लक्ष्यों के बारे में पढ़ना चाहते हैं, जो निवेश के लिए उपयुक्त हैं, तो ये करीब–करीब असंभव कार्य होगा। अगर आप इन फंड्स को उनके निवेश के गुणों के आधार पर कुछ श्रेणियों में बांट दें तो ये काम और आसान हो सकता है।

फंड्स के वर्गीकरण की जरूरत इसलिए है कि आप जिस फंड में निवेश करने जा रहे हैं उससे रिटर्न की उम्मीदों और अपनी जोखिम लेने की क्षमता का मिलान कर पाएं।

वैल्यू रिसर्च द्वारा म्यूचुअल फंड्स के वर्गीकरण का मकसद ही जोखिम और रिटर्न की पूरी दुनिया को एक समान रिटर्न और जोखिम की उम्मीदों की विभिन्न श्रेणियों में बांटना है। ये उस काम को काफी आसान बना देता है जिसमें आप ऐसे फंड्स की पहचान करना चाहते हैं जो कम जोखिम के साथ ज्यादा रिटर्न दे पाते हैं। फंड्स की पूरी दुनिया को 26 श्रेणियों में बांटा जा सकता है। 12 शुद्ध इक्विटी फंड्स हैं, 6 हाइब्रिड फंड्स हैं और 7 शुद्ध रूप से डेट फंड्स हैं और अंत में 1 श्रेणी गोल्ड फंड की है।

इस तरीके से आप जोखिम और रिटर्न के संपूर्ण संतुलन की स्थिति तक पहुंच सकते हैं और एक ही तरह से फंड्स की तुलना आसानी से की जा सकती है। पूरा वर्गीकरण बीते तीन सालों में फंड प्रबंधकों द्वारा चलाए जा रहे वास्तविक पोर्टफोलियो की स्थिति के आधार पर तय किया गया है।

डेट फंड

इनकम फंड: ऐसे फंड्स जो अपने घोषित लक्ष्यों के मुताबिक अपनी औसत मैच्योरिटी में बदलाव ला सकते हैं

गिल्ट: मध्यम और लंबी अवधि के फंड: जो फंड्स गिल्ट सिक्योरिटीज में निवेश करते हैं और अपने घोषित लक्ष्यों के मुताबिक अपनी औसत मैच्योरिटी में बदलाव ला सकते हैं

लघु अवधि वाले फंड: ऐसे फंड जो गिल्ट में निवेश करते हैं और जिनकी औसत मैच्योरिटी बीते 6 माह में 1 से 4.5 साल के बीच है।

अल्ट्रा शार्ट टर्म फंड: ऐसे फंड जिनकी औसत मैच्योरिटी बीते 6 माह में एक साल से कम है लेकिन वे लिक्विड फंड नहीं है

लिक्विड फंड: ऐसे फंड्स जो अपनी परिसंपत्तियों का निवेश ऐसी सिक्योरिटीज में बिल्कुल नहीं करते जिनकी मैच्योरिटी 91 दिन से ज्यादा है।

एफएमपी: फंड जिनकी अवधि फंड कंपनी द्वारा तय होती है।

इक्विटी फंड

लार्ज कैप फंड: फंड्स जो बीते तीन सालों में अपनी परिसंपत्तियों का 80 फीसदी लार्ज कैप कंपनियों में निवेश करते हैं

लार्ज एंड मिड कैप फंड: फंड्स जिन्होने बीते तीन सालों में 60 से 80 फीसदी निवेश लार्ज कैप कंपनियों में किया है

मल्टी कैप: फंड्स जिन्होने बीते तीन सालों में 40 से 60 फीसदी परिसंपत्तियों को लार्ज कैप में निवेशित रखा है

मिड कैप स्मॉल कैप: फंड्स जिन्होने बीते तीन सालों में कम से कम 60 फीसदी परिसंपत्ति को स्मॉल एंड मिड कैप शेयरों में लगाया है

टैक्स प्लानिंग: ऐसे फंड्स में आयकर अधिनियम की धारा 80 सी के तहत कर की छूट मिलती है

अंतरराष्ट्रीय: ऐसे फंड्स जिनकी 65 फीसदी परिसंपत्तियों का निवेश विदेश में है

सेक्टर फंड

बैंकिग सेक्टर फंड: निवेश के लक्ष्यों के मुताबिक

एफएमसीजी फंड: निवेश के लक्ष्यों के मुताबिक

इन्फ्रास्ट्रक्चर सेक्टर फंड: निवेश के लक्ष्यों के मुताबिक

फार्मा सेक्टर: निवेश के लक्ष्यों के मुताबिक

टेक्नोलॉजी, आईटी सेक्टर फंड: निवेश के लक्ष्यों के मुताबिक

मिले जुले फंड्स: अन्य फंड्स जिनको मौजूदा किसी भी श्रेणी में नहीं रखा जा सकता और उनकी अलग से श्रेणी बनाने लायक संख्या नहीं है

हाइब्रिड फंड

इक्विटी आधारित: हाइब्रिड फंड जिनका एक साल में औसतन 60 फीसदी निवेश इक्विटी में हुआ है

आक्रामक डेट आधारित: ऐसे हाइब्रिड फंड्स जिनका पिछले एक साल में 25 से 60 फीसदी औसत निवेश इक्विटी में है

रूढ़िवादी डेट आधारित: ऐसे हाइब्रिड फंड्स जिनका पिछले एक साल में औसत निवेश 25 फीसदी से कम इक्विटी में है

आर्बिट्राज: ऐसे फंड्स जो इक्विटी और डेरीवेटिव के बीच अंतर का इस्तेमाल रिटर्न प्राप्त करने के लिए करते हैं और जब ऐसा अवसर नहीं होता तो डेट में निवेश करते हैं

एसेट एलोकेशन: ऐसे फंड्स जो बाजार की स्थिति के मद्देनजर पूरा निवेश इक्विटी अथवा डेट में कर सकते हैं

मिले जुले: अन्य फंड्स जिनको मौजूदा किसी भी श्रेणी में नहीं रखा जा सकता और उनकी अलग से श्रेणी बनाने लायक संख्या नहीं है

कुल एक्सपेन्स रेशो (टीईआर): आमतौर पर एमएसी, प्रोफेशनल तौर पर फंड प्रबंधन के लिए निवेशकों से कुछ खर्च वसूलती है जिनमें सामान्य कामकाज के खर्चे, निवेश के प्रबंधन पर हुए खर्च, सलाह के लिए फीस, बिक्री या एजेंट का कमीशन, सेवा शुल्क, कानूनी और ऑडिट फीस, रजिस्ट्रार और ट्रांसफर एजेंट का खर्च, फंड के संचालन का खर्च, मार्केटिंग और बेचने की लागत शामिल हैं।

ये सभी खर्च जो निवेशकों से वसूले जाते हैं उन्हें कुल एक्सपेन्स रेशो के नाम से जाना जाता है, ये एक सालाना खर्च होता है जो प्रबंधन की राशि (एयूएम) का कुछ फीसदी होता है। सेबी के दिशानिर्देशों के मुताबिक जैसे-जैसे एसेट अंडर मैनेजमेंट बढ़ता है कुल एक्सपेन्स रेशो घटना चाहिए। किसी भी म्यूचुअल फंड का एनएवी, कुल एक्सपेन्स रेशो को मिलाते हुए सभी देनदारियों के बाद तय की जाती है। इसका मतलब हुआ कि अगर कुल एक्सपेन्स रेशो कम हुआ तो एनएवी ज्यादा होता है और ज्यादा होने पर एनएवी कम हो जाता है। हाल ही में सेबी ने सर्विस टैक्स को भी निवेशकों पर लगने वाले खर्च में शामिल कर लिया है जो पहले एएमसी द्वारा अदा किया जाता था। तो इस तरह से कुल एक्सपेन्स रेशो किसी भी अकाउंटिग अवधि में कुल शुद्ध परिसंपत्तियों को कुल खर्च से भाग देने पर मिलता है।

टीईआर के तहत होने वाले खर्च

1 अक्टूबर 2012 को सेबी ने टीईआर को लचीला बना दिया, सरल भाषा में कहें तो परिवर्तनीय बना दिया। जैसे कि आप 100 रुपए के नोट को दूसरे 100 रुपए से उनकी वैधता तक आसानी से आपस में बदला जा सकता

टीईआर को लेकर सेबी की सीमाएं (फीसदी में)

दैनिक एनएवी (रुपए)	इक्विटी	डेट
पहले 100 करोड़	2.50	2.25
अगले 300 करोड़	2.25	2.00
अगले 300 करोड़	2.00	1.75
बाकी के बचे हुए एसेट पर	1.75	1.50

है। एएमसी के लिए इसका मतलब ये हुआ कि खर्चे एक सिंगल पूल के तौर पर किए जाएंगे जिसे बाद में विभिन्न खर्चों और शुल्क में विभाजित किया जा सकता है। अक्टूबर 2012 तक मैनेजमेंट फीस और वास्तविक खर्चों में आंतरिक बंटवारा होता था जो अब एक ही हेड टीईआर (टोटल एक्सपेन्स रेशो) के तहत शामिल होगा।

ऊपर दिए गए खर्चों के अलावा 1 अक्टूबर 2012 से सेबी ने योजना में इन अतिरिक्त खर्चों को मंजूरी दे दी है।

1. अलग-अलग श्रेणियों में अतिरिक्त खर्च जो दैनिक एनएवी का 0.2 फीसदी से अधिक नही होगा
2. 15 बड़े शहरों के अलावा दूसरे शहरों में निवेश को बढ़ावा देने के लिए योजना में दैनिक एनएवी का अधिकतम 0.30 फीसदी खर्च को मंजूरी मिली है बशर्ते सेबी द्वारा तय नियमों के मुताबिक इन शहरों से आने वाले नए निवेश की हिस्सेदारी
   क) योजना की कुल निवेश का 30 फीसदी हो
   ख) योजना के औसत शुद्ध एएमयू (बीते एक साल का) का 15 फीसदी हो

अगर निवेश के एक साल के भीतर इसे वापिस निकाल लिया गया है तो इन शहरों से आने वाले निवेश के लिए जो अतिरिक्त खर्च किया गया है उसे वापिस उस योजना में निवेशित किया जाएगा।

लेनदेन का खर्चः अगर निवेश किसी डिस्ट्रीब्यूटर अथवा एजेंट के जरिए किया गया है तो इस स्थिति में अगस्त 2011 में सेबी ने एएमसी को एक बार के खर्चे के रूप में एक छोटी सी राशि की वसूली की अनुमति दी है। नियम ये है कि पहली बार निवेश कर रहे 10,000 रुपए पर 150 रुपए और पहले से निवेश कर रहे निवेशकों के लिए शुल्क 100 रुपए होगा। 10,000 रुपए से कम के निवेश पर कोई शुल्क नहीं लिया जा सकता।

कुल एक्सपेन्स रेशो कुल प्रबंधन राशि (एयूएम) पर लगने वाला कुछ फीसदी सालाना खर्च है जो एयूएम के बढ़ने के साथ घटता है

एसआईपी के मामले में अगर 10,000 रुपए से ज्यादा का निवेश होना तय है तो 4 समान किश्तों में 100 रुपए की ट्रान्जेक्शन फीस लगेगी जो एसआईपी की दूसरी किश्त से पांचवी किश्त तक वसूल की जा सकेगी।

एक्जिट लोडः ये शुल्क उस वक्त लगाया जाता है जब निवेशक एक्जिट लोड के लिए निर्धारित समयावधि के भीतर अपनी यूनिटों की बिक्री कर देता है। म्यूचुअल फंड्स एक पर्याप्त अवधि से पहले योजना में से निवेश की निकासी को रोकने के लिए एक्जिट लोड का इस्तेमाल करते हैं। अलग-अलग तरह की श्रेणियों में पहले से तय निवेश की समयावधि के आधार पर एक्जिट लोड लगाते हैं।

ये शुल्क फंड योजनाओं में अलग-अलग होते हैं और इसमें एक तय नियम का पालन किया जाता है जिसमें निवेश की अवधि जितनी ज्यादा होती है एक्जिट लोड उतना कम होता है। कई मामलों में निवेश की अवधि लंबी होने की स्थिति में एक्जिट लोड कुछ भी नहीं होता। अगर निवेशकों पर एक्जिट लोड लगता है तो इसे सर्विस टैक्स काटने के बाद वापिस योजना में निवेश कर दिया जाता है।

दूसरी लागतेंः एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) में निवेश करने की स्थिति में निवेशकों को कुछ अप्रत्यक्ष लागत वहन करनी पड़ती है जिसमें उसे डीमैट अकाउंट खोलने, उसके रखरखाव का खर्चा और ब्रोकरेज देना होता है। इसके साथ ही म्यूचुअल फंड्स शेयरों की खरीद फरोख्त करते वक्त सिक्योरिटीज ट्रांजेक्शन टैक्स देना होता है जिसका अप्रत्यक्ष बोझ निवेशकों को वहन करना होता है। यूनिटधारकों को यूनिटों को भुनाने और इक्विटी आधारित फंड में यूनिटों के फेरबदल की स्थिति में 0.001 फीसदी की दर से सिक्योरिटीज ट्रांजेक्शन टैक्स (एसटीटी) देना होता है।

अकाउंट स्टेटमेंट क्या है?

म्यूचुअल फंड्स अकाउंट स्टेटमेंट में आपके निवेश से जुड़ी कई जानकारियां जैसे कि फंड का नाम, फोलियो संख्या, आपका पैन नंबर, किस तरह की निवेश योजना में आपने निवेश किया है, ग्रोथ, डिविडेंड अथवा डिविडेंड को फिर से निवेश करने वाले विकल्प में पैसा लगाया

Consolidated Account Statement

01-Nov-2009 to 12-Dec-2013

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX
XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX
XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX
XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX
XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX
XXXXXXXXXXXXXXXXX

This consolidated account Statement is brought to you as an investor friendly initiative by CAMS, Karvy and FTAMIL, and lists the transactions, balances and valuation of Mutual Funds in which you are holding investments. The consolidation has been carried out based on the email id entered by you. If you have not entered a PAN number and if the email id is common to several members of your family, this statement will consolidate all those investments as well.

If you find any folios missing from this consolidation, you have not registered your email id against those folios.

Date	Transaction	Amount (INR)	Units	Price (INR)	Unit Balance
XYZ Mutual Fund					
Folio No: 123456789/0		PAN: ABC1234XC		KYC: OK	PAN: OK
116 XYZD-ABC Advantage Fund - Regular Plan - Growth (Advisor: ARN-12345)					Registrar: ABCD
					Opening Unit Balance: 0.000
08-Jun-2010	Systematic Investment (1)	2,000.00	94.697	21.12	94.697
12-Aug-2010	Systematic Investment (1/3)	2,000.00	84.674	23.62	179.371
15-Sep-2010	Systematic Investment (2/3)	2,000.00	80.289	24.91	259.660
15-Oct-2010	Systematic Investment (3/3)	2,000.00	79.208	25.25	338.868
Closing Unit Balance: 338.868	**NAV on 18-Nov-2013: INR 24.99**			**Valuation on 18-Nov-2013: INR 8,468.31**	

Current Entry Load - NIL w.e.f. 1st Aug 2009. Current Exit Load - NIL subject to lock-in period of 3 years. The above investment in XYZ ABC Advantage Fund is eligible for availing tax benefits under section 80C of income tax 1961. Applicable NAV refers to Load adjusted NAV as defined in Scheme Information document

है, जैसे डीटेल्स शामिल होते हैं। आप ये भी देख सकते हैं कि आपने कितनी राशि का निवेश किया है, कितनी यूनिटें आपको मिली हैं और इन यूनिटों की कीमत क्या है।

1 अक्टूबर 2011 से सेबी के दिशानिर्देशों के मुताबिक निवेशकों के पंजीकृत मोबाइल नंबर अथवा ईमेल पते पर निवेश के 5 कारोबारी दिनों के भीतर एसएमएस अथवा ईमेल के जरिए निवेश और यूनिटों के अलॉट किए जाने की पुष्टि करने वाले संदेश का भेजा जाना जरूरी है। इस शुरुआती पुष्टीकरण के बाद माह की 10 तारीख तक अकाउंट का समग्र ब्योरा (कंसोलिडेटेड अकाउंट स्टेटमेंट) देना जरूरी है जिसमें बीते माह के भीतर फोलियो में किए गए निवेश की पूरी डीटेल देना अनिवार्य है। किसी खास समयावधि के निवेश की डीटेल्स की जानकारी के लिए भी निवेशक आवेदन कर सकते हैं जिसके लिए कोई चार्ज नहीं देना होता।

सीएएस (कंसोलिडेटेड अकाउंट स्टेटमेंट) एक तरह का एकल अकाउंट स्टेटमेंट होता है जिसमें म्यूचुअल फंड्स की सभी योजनाओं में यूनिट धारक के सभी फोलियो द्वारा किए गए सभी कारोबार का पूरा ब्योरा शामिल होता है। इस स्टेटमेंट में केवल उन्हीं फोलियो में निवेश का ब्योरा होता है जो एक माह के दौरान ऐसे निवेशक द्वारा किए गए हैं जो पैन और केवाईसी

समग्र निवेश

एक समग्र अकाउंट स्टेटमेंट (सीएएस) के लिए अलग–अलग फंड हाउस में निवेशकों की पहचान उनके परमानेंट अकाउंट नंबर यानी पैन के आधार पर की जाती है। फोलियो में निवेश की स्थिति के आधार पर सीएएस तैयार किया जाता है। उदाहरण के तौर पर अगर ए बी और सी नाम के निवेशक किसी खास फोलियो में युनिटधारक हैं तो फंड हाउस के ऐसे सभी फोलियो जिनमें एक जैसी हिस्सेदारी है, उनका इस्तेमाल सीएसएस बनाने के लिए किया जाता है।

के नियमों का पालन करते हैं। आइए आपको बताते हैं कि आप सीएएस को कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

अपडेट: आपको सभी निवेशकों की स्व–प्रमाणित पैन नंबर की प्रतिलिपि और एक पत्र जिसमें फोलियो नंबर और निवेशक की पूरी जानकारी होती है एएमसी के पास जमा करना होता है।

केवाईसी नियमों का पालन: आपको केवाईसी पंजीकरण एजेंसी के पास केवाईसी की औपचारिकताएं पूरी करनी जरूरी हैं। अपनी पहचान और पते के प्रमाण के साथ केवाईसी फार्म को भरना जरूरी है।

योग्यता: अगर सभी म्यूचुअल फंड्स में होल्डिंग का तरीका और स्थिति एक ही है उस स्थिति में निवेश एक साझा सीएएस के लिए योग्य है।

फंड में अपना निवेश कैसे भुनाएं?

किसी म्यूचुअल फंड्स योजना में रिडेम्पशन का मतलब है कि आप उस योजना में यूनिटों की बिक्री कर रहे हैं। ये प्रक्रिया इस बात पर निर्भर करेगी कि आपने फंड योजना में किस तरह से निवेश किया है। निवेश किसी डिस्ट्रीब्यूटर के जरिए किया गया है अथवा एएमसी से सीधे खरीदा गया है।

चाहे आपने किसी एजेंट से म्यूचुअल फंड्स खरीदा हो अथवा एएमसी से सीधे, निवेश भुनाने के लिए आपको निकासी का फार्म भरना जरूरी है। इस फार्म में जो जरूरी जानकारियां आपको भरनी हैं उनमें आपका नाम, जिस फंड में आपने निवेश किया है उसकी फोलियो संख्या, और कितनी यूनिटों को आप भुनाना चाहते हैं उसका जिक्र करना होगा।

Redemption Transaction Slip

Name of the Mutual Fund: _____

Folio No.: _____ PAN: _____

Investor Name: _____

Scheme: _____ Plan: _____ Option: Payout / Reinvest

I/We wish to redeem _____ units / Amount of Rs. _____ or All units

Please credit the redemption proceeds:

☐ To my registered default bank account on record in this folio.

☐ To the following registered bank account [in this Folio] given below for this transaction alone:

Bank Name: _____

A/c No.: _____

If my/our unit/amount balance is inadequate to meet the request, I/We authorize you to redeem available units/amount and send the proceeds accordingly. I/We am/are authorized to undertake this transaction.

****

I/We have read and understood the contents of the Scheme Information Document(s), Key Information Memorandum and Addenda issued for the respective scheme(s). I/We hereby apply to the Trustee of Mutual Fund and agree to abide by terms and conditions, rules and regulation of the relevant scheme(s) / Mutual Fund.

यहां आपके अकाउंट की डीटेल्स का भी काफी महत्व है खास तौर पर वो डीटेल्स जो आपने पहली बार निवेश के वक्त दी थीं। ऐसा इसलिए क्योंकि जब आप म्यूचुअल फंड्स को रिडीम करते (भुनाते) हैं तो निकासी के बाद आपका पैसा उसी अकाउंट में वापिस जाता है। अगर आपने अपना बैंक अकाउंट बदला है तो आपको अपने नए बैंक अकाउंट का प्रमाण देना होगा।

इसके लिए आप अपने नए बैंक अकाउंट के पासबुक की एक प्रतिलिपि जमा कर सकते हैं। बैंक की ओर से जारी और बैंक मैनेजर द्वारा हस्ताक्षरित एक घोषणापत्र से भी आप अपनी यूनिटों की निकासी कर सकते हैं। सामान्य तौर पर जब आप अपना पूरा भरा हुआ निकासी फार्म जमा करते हैं उसके 10 दिनों के भीतर आपका पैसा आपके अकाउंट में वापिस आ जाता है।

अध्याय
3

आपकी जरूरत के लिए म्यूचुअल फंड

भारत में 2000 से ज्यादा फंड योजनाएं हैं जिनमें चयन का विकल्प आपके पास है। कई ऐसे फंड्स भी हैं जो किसी खास मकसद के मद्देनजर काम आ सकते हैं और कई तरह के उद्देश्यों के लिए उन फंड्स का इस्तेमाल एक उचित पोर्टफोलियो का निर्माण करने के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर कई फंड्स ऐसे हैं जहां कम अवधि के लिए अपना कैश रखने से लेकर रिटायरमेंट प्लानिंग तक के लिए पोर्टफोलियो बनाया जा सकता है जो कई दशकों के लिए होता है। यही वो जगह है जहां पर आप कई स्तरों के आधार पर चुनाव कर सकते हैं और एक तरह से गेंहू को छिलके से अलग कर सकते हैं।

कैसे करें फंड का चुनाव?

कई फंड की उपलब्धता के बीच किसी फंड का चुनाव काफी मुश्किल काम है। ऐसा कम ही होता है कि निवेशक, जो जीनवयापन के लिए कुछ और काम करते हैं, जिस फंड में निवेश करने की सोच रहे हैं उसके मूल्यांकन के लिए उनके पास एक व्यवस्थित चेकलिस्ट हो। आइए अब आपको किसी फंड के चयन के लिए एक संरचनात्मक रणनीति के बारे में बताते हैं। कोई भी फंड अच्छा निवेश है और शुरुआत के लिए मुफीद है,

इसके लिए आपको 5 आधारभूत क्षेत्रों के आधार पर मूल्यांकन करना है।

प्रदर्शन: जब भी आप फंड का चयन करते हैं तो आपको ऐसे फंड की ओर देखना चाहिए जिनके प्रदर्शन का इतिहास मौजूद है खासतौर पर बाजार के अच्छे और बुरे दोनों तरह की स्थिति में। इसके बाद मिलते-जुलते फंड्स यानी एक ही श्रेणी वाले फंड्स के साथ तुलना कीजिए। अगर आप एक ही श्रेणी के फंड्स के बीच में प्रदर्शन को लेकर तुलना करते हैं तभी आंकड़े आपको सही तस्वीर दिखाते हैं।

फंड की तुलना के लिए एक अच्छा तरीका ये है कि आप वैल्यू रिसर्च, मनी कंट्रोल.कॉम, क्रिसिल और दूसरी स्वतंत्र संस्थाओं की रेटिंग एजेंसियों का इस्तेमाल करें। ये रेटिंग आपको बताएगी कि जोखिम के समाजोयन के साथ फंड ने कैसा प्रदर्शन किया है और बीते वक्त में उस श्रेणी के फंड्स में उसकी स्थिति क्या है। फंड रेटिंग को किसी भी फंड के मूल्यांकन के लिए एक अच्छी शुरुआत कहा जा सकता है।

विविधता: म्यूचुअल फंड विविधता भरे होते हैं, लेकिन ऐसा कौन सा रास्ता है जिसके आधार पर आप ये मूल्यांकन कर सकते हैं कि फंड में अच्छे स्तर की विविधता है अथवा नहीं। फंड में अच्छे स्तर की विविधता है अथवा नहीं उसकी जांच का एक तरीका ये है कि आप फंड के पोर्टफोलियो पर निगाह डालें जो हर माह उपलब्ध होता है। उदाहरण के तौर पर एक अच्छे स्तर की विविधता वाले फंड में कम से कम 20 से 30 शेयर होने चाहिए और पूरे पोर्टफोलियो में कम से कम निश्चित फीसदी हिस्सेदारी जरूर होनी चाहिए। ये शेयर कम से कम 5 सेक्टर के होने चाहिए और हर सेक्टर की भी एक निश्चित हिस्सेदारी होनी चाहिए। एक निश्चित हिस्सेदारी लार्ज कैप फंड में होना भी जरूरी है क्योंकि बुरे वक्त में ये ज्यादा स्थाई होते हैं। इसके अलावा भी कई कारक हो सकते हैं।

कुल मिलाकर, ये नियम एक ऐसी रूपरेखा का निर्माण करते हैं जो इस

! पांच आधारभूत क्षेत्रों के आधार पर आप किसी फंड का मूल्यांकन कर सकते हैं कि अमुक फंड अच्छा है और फिर निवेश का प्रारंभ कर सकते हैं

बात को सुनिश्चित करते हैं कि पोर्टफोलियो में विविधता रहे जिससे हर उस आघात और झटके से फंड को बचाया जा सके जो किसी खास शेयर, किसी खास सेक्टर, या खास तरह के शेयरों पर हमलावर हो सकते हैं। जो व्यक्ति अपने निवेश का स्वयं प्रबंधन करते हैं उनके पास ये सब करने के लिए न तो अनुशासन होता है न ही पर्याप्त जानकारी। और अगर निवेशक के पास जानकारी अथवा अनुशासन हो भी तो उसके पास ऐसा हथियार नहीं होता जिससे वो मूल्यांकन कर सके कि पोर्टफोलियो में अच्छे स्तर की विविधता है या नहीं।

जोखिमः ज्यादातर निवेश में जोखिम होता है और कम-से-कम सार्थक रिटर्न देने वाले निवेश में तो होता ही है। आमतौर पर कहा जाता है कि जिस फंड में ज्यादा जोखिम होता है, ज्यादातर वक्त में उसमें बेहतर रिटर्न देने की क्षमता ज्यादा होती है। लेकिन ये समझने का काफी आसान तरीका है कि जोखिम आपको हमेशा एक जैसा परिणाम ही देगा। ये बिल्कुल सत्य नहीं है क्योंकि सभी फंड्स का संचालन एक जैसी दक्षता के साथ नहीं किया जाता। जोखिम को मापने का सही तरीका ये है कि क्या फंड जितना जोखिम ले रहा है उसके अनुसार न्यायोचित रिटर्न दे पा रहा है अथवा नहीं।

साफ तौर पर, रिटर्न की तरह जोखिम को माप पाना आसान नहीं है। ऐसी कई तरह की सांख्यिकीय तकनीक हैं जिनके इस्तेमाल के जरिए इसे मापा जा सकता है, और रेटिंग एजेंसियां प्रदर्शन और जोखिम के आकलन के संयोग से अपनी फंड रेटिंग तैयार करती हैं। जब भी एक रेटिंग एजेंसी कहती है कि फंड 4 या 5 स्टार रेटिंग फंड है तो इसका मतलब हुआ कि दूसरे समान तरह के फंड के मुकाबले इसके जोखिम के मद्देनजर इसने बेहतर प्रदर्शन किया है।

पोर्टफोलियोः प्रदर्शन और रिटर्न से उलटे पोर्टफोलियो किसी फंड का आंतरिक स्वरूप है। इस मामले में कि किसी भी पोर्टफोलियो के अच्छे,

तकरीबन सभी निवेश जोखिम भरे हैं, कम से कम ऐसे निवेश जो आपको मंहगाई से बेहतर रिटर्न दें वो तो जोखिमभरे होंगे ही

बुरे और घटिया होने के लिए आप जोखिम और रिटर्न के आधार पर किसी फंड का चयन कर सकते हैं। इस बात से वास्तव में कोई फर्क नही पड़ता कि फंड में है क्या?

किसी भी फंड की मासिक फैक्ट शीट (जो फंड की वेबसाइट पर मौजूद है) जो ये दिखाती है कि बीते माह फंड में किसकी कितनी हिस्सेदारी थी। इस फैक्ट शीट में अहम सूचना, जिसका आप इस्तेमाल कर सकते हैं, वो हैं पोर्टफोलियो के आंकड़े। ये आंकड़े दिखाते हैं कि फंड की कितनी हिस्सेदारी किस किस शेयर और निवेश के दूसरे तरीकों में है। किस सेक्टर में फंड का कितना निवेश किया गया है ये भी जानकारी आंकड़ों में दिखाई देती है।

तय आमदनी वाले फंड्स में आंकड़े ये दिखाते हैं कि जहां पर निवेश किया गया है उसमें तय आमदनी की गुणवत्ता क्या है। आप इसकी विवेचना भी कर सकते हैं कि फंड को सुरक्षित सिक्योरिटीज पसंद हैं अथवा ज्यादा जोखिम (ज्यादा रिटर्न) वाले सिक्योरिटीज। हाइब्रिड फंड के मामले में पोर्टफोलियो के आकलन के लिए इक्विटी और डेट दोनो तरह के निवेश की जांच की जा सकती है।

प्रबंधनः फंड प्रबंधन काफी सृजनात्मक और व्यक्ति केन्द्रित कार्य है। ये बात कुछ तरह के फंड्स जैसे कि शार्ट टर्म तय आमदनी वाले फंड्स, और इंडेक्स फंड्स के संदर्भ में सत्य नहीं है लेकिन इक्विटी निवेश के संदर्भ में ये किसी विज्ञान से भी ज्यादा है। जब भी आप किसी फंड को इस आधार पर खरीदते हैं क्योंकि उसका ट्रैक रिकार्ड (जब तक आप किसी फंड के भविष्य का अंदाज नहीं लगा लेते, खरीददारी का यही एक तरीका बचता है) अच्छा है तो वास्तव में आप फंड मैनेजर (कभी-कभी उनकी टीम) के ट्रैक रिकार्ड में खरीददारी करते हैं।

फंड खरीदते वक्त आपको ये भी सुनिश्चित करना है कि फंड के ट्रैक

फंड की वेबसाइट पर मासिक फैक्ट शीट बीते माह में फंड में निवेश की हिस्सेदारी के बारे मे बताती है

रिकार्ड के लिए जो फंड मैनेजर जिम्मेदार था वो अब भी वहां है या नहीं। कुल मिलाकर नए फंड प्रबंधक के साथ एक बेहतरीन प्रदर्शन वाला इक्विटी फंड वास्तव में कुछ हद तक एक नए फंड ऑफर की ही तरह है।

लागतः अब जबकि फंड के आकलन के लिए चार मुख्य बिन्दुओं की चर्चा हो चुकी है, एक कारक और भी है जिसकी अहमियत बढ़ती जा रही है और वो है लागत। फंड्स मुफ्त में नहीं चलाए जाते और न ही सभी फंड्स की लागत एक समान होती है। अलग-अलग फंड्स में लागत में बहुत ज्यादा अंतर नहीं होता लेकिन कभी-कभी ये अंतर काफी बढ़ जाता है, खासकर तय आमदनी वाले फंड्स के मामले में जहां पर फंड्स के प्रदर्शन का अंतर शुरुआत में काफी कम होता है। इक्विटी फंड्स के मामले में भी अगर कम लागत वाले फंड की तुलना में कोई थोड़ा सा बेहतर प्रदर्शन कर रहा है, तो इस आधार पर ज्यादा लागत वाले फंड्स में खरीददारी, फायदे का सौदा नहीं है।

याद रहे किसी एएमसी के पास दूसरों की तुलना मे ज्यादा लागत होने की कोई वजह नहीं है। ये बात अलग है कि हो सकता है कि फंड अपना मार्जिन बढ़ाना चाहता है अथवा मार्केटिंग पर ज्यादा खर्च करना चाहता है, जिसका आपसे कोई लेना-देना नहीं है।

अलग जरूरतें, अलग फंड्स

उपयोगी, समझने में सरल और क्रियान्वयन में आसानी। आपके निवेश के यही गुण होने चाहिए। हालांकि हो सकता है कि आपके वित्तीय लक्ष्य अलग हों और इसे हासिल करने के लिए अलग नजरिए और फंड्स के समूह की जरूरत हो। उदाहरण के तौर पर आपकी जरूरत लंबी अवधि का विकास या फिर टैक्स की बचत या फिर रिटायरमेंट के लिए आमदनी हो सकती है।

आपकी वित्तीय जरूरतें अलग हो सकती हैं और इसके लिए अलग रणनीति और उन्हें प्राप्त करने के लिए अलग फंड समूह की जरूरत हो सकती है

विकास (ग्रोथ)

आपका निवेश या तो विकास कर सकता है या उसका मोल बढ़ सकता है या फिर आय उत्पन्न कर सकता है। अगर आप विकास के लिए निवेश कर रहे हैं तो इसका मतलब है कि आप अपनी बचत से आमदनी प्राप्त नहीं कर रहे और सारे ब्याज और लाभांश आदि को दोबारा निवेश कर देते हैं। विकास चाहने वाले निवेशक वो होते हैं जिनके पास वक्त होता है और जो अपने निवेश को बढ़ते हुए देखते हैं। ऐसा इसलिये भी चूंकि वे किसी खास मकसद जैसे कि रिटायरमेंट, बच्चों के विश्वविद्यालय की पढ़ाई या फिर शादी के खर्चे के लिए निवेश कर रहे होते हैं। सामान्य तौर पर इसका मतलब ये होता है कि बचत कुछ महीनों की बजाय कम से कम 5 से 7 सालों के लिए की जाती है।

विकास के लिए निवेश का मतलब है लंबी अवधि के लिए निवेश और विकास के लिए निवेश का निश्चित मतलब ये है कि आप इक्विटी अथवा इक्विटी आधारित निवेश के तरीकों में अपना पैसा लगा रहे हैं क्योंकि लंबी अवधि का इक्विटी निवेश ही मंहगाई को पराजित कर सकता है।

तो निवेश के लिए कितने तरह के फंड्स हैं? इक्विटी और बैलैंस्ड फंड्स, अंतरराष्ट्रीय फंड्स और दूसरे तरह के इक्विटी फंड्स जैसे कि इंडेक्स फंड्स अथवा किसी थीम पर आधारित फंड्स।

इक्विटी फंड्स: ऐसे फंड्स अपना अधिकतर निवेश अलग-अलग बाजार पूंजीकरण के शेयरों में करते हैं। इन्हें लार्ज कैप, लार्ज एंड मिडकैप, मल्टीकैप, और अंतरराष्ट्रीय फंड्स में बांटा जा सकता है।

बैलेंस्ड फंड्स: इन्हें हाइब्रिड फंड्स भी कहा जाता है जो इक्विटी और डेट निवेश का एक निश्चित अनुपात में मिश्रण होते हैं। इस अनुपात को बनाए रखने के लिए फंड मैनेजर ज्यादा मुनाफे वाली जगह से कम मुनाफे वाली जगह पर निवेश करते हैं। दरअसल इक्विटी में होने वाले मुनाफे को डेट

लंबी अवधि में इक्विटी ही ऐसी परिसंपत्ति है जो महंगाई को हराने और सकारात्मक रिटर्न हासिल करने में कामयाब हो सकती है

लार्ज कैप फंड का पिछले 5 साल का रिटर्न

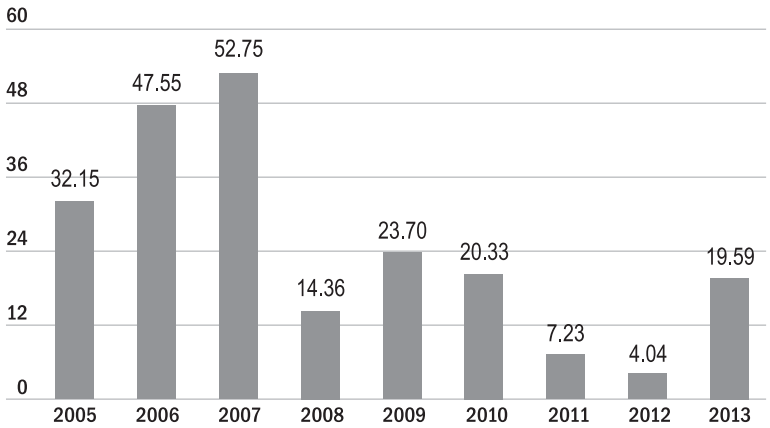

ये फंड सुरक्षित होते हैं, इनके रिटर्न का अनुमान लगाया जा सकता है और बाजार के साथ इनमें कम उतार–चढ़ाव होता है

के जरिए सुरक्षा दी जाती है।

बैलेंस्ड फंड्स का ये लाभ है कि ये शुद्ध इक्विटी फंड्स की तुलना में ज्यादा सुरक्षित होते हैं। जब बाजार में मुनाफा होता है तो इनमें भी अच्छी बढ़त होती है लेकिन जब बाजार गिरता है तो इनमें कम तेजी से गिरावट

लार्ज कैप फंड का पिछले 10 साल का रिटर्न

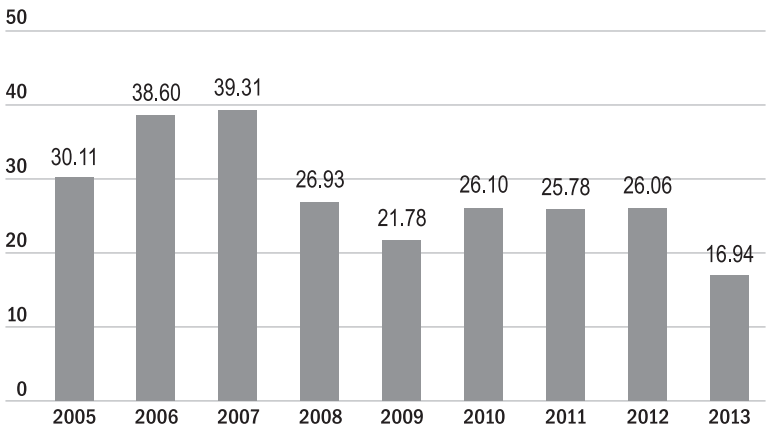

ये फंड्स बाजार के उतार–चढ़ाव से कम प्रभावित होते हैं और अर्थव्यवस्था के प्रदर्शन का आईना होते हैं

लार्ज एंड मिडकैप फंड का पिछले 5 साल का रिटर्न

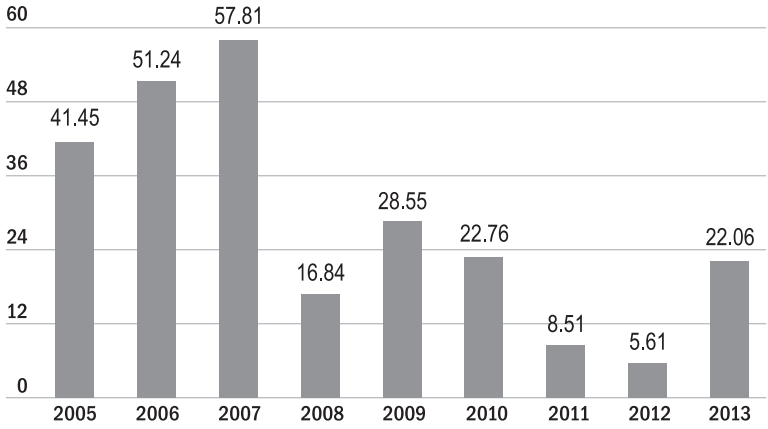

बाजार की तेजी में ये बेंचमार्क (मानदंड) से बेहतर प्रदर्शन करते हैं

होती है और अच्छे वक्त में हुए मुनाफे की सुरक्षा हो जाती है।

अंतरराष्ट्रीय फंड्सः भारतीय म्यूचुअल फंड्स में ऐसे फंड्स की संख्या बढ़ रही है जो विदेश में निवेश करते हैं। ये फंड्स भारत से बाहर निवेश करते हैं जो भौगोलिक विविधता के साथ-साथ अलग-अलग तरह से थीम और

लार्ज एंड मिडकैप फंड पिछले 10 साल का रिटर्न

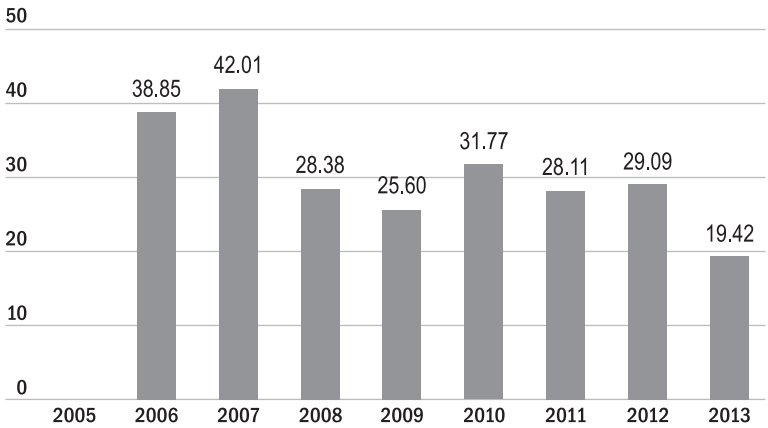

इन फंड्स में बेहतर रिटर्न के लिए, मिडकैप शेयरो में निवेश ही असली मुद्दा है

बैलेंस्ड फंड का पिछले 5 साल का रिटर्न

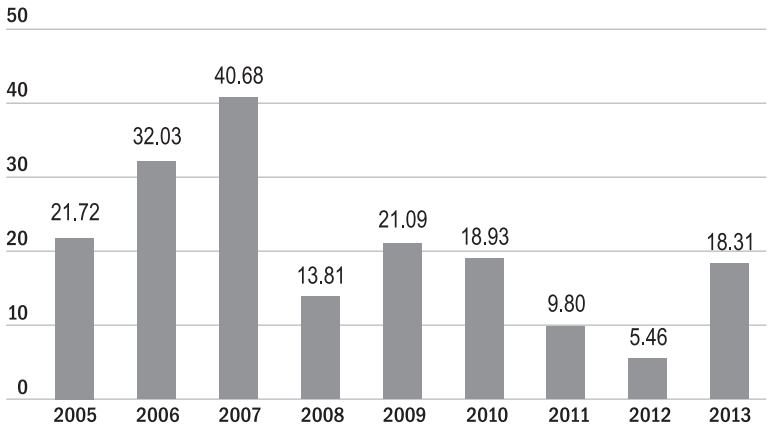

ये फंड्स सामान्य बाजार से बेहतर प्रदर्शन करने के लिए नही बने हैं लेकिन गिरावट को जरूर रोकते हैं

कारोबार में भी निवेश करते हैं।

फिलहाल तीन तरह के वैश्विक फंड्स मौजूद हैं- पहले वे जो सीधे तौर पर वैश्विक बाजार में निवेश करते हैं, दूसरे जो मौजूदा वैश्विक फंड्स में निवेश के लिए फीडर के रास्ते का इस्तेमाल करते हैं और फंड्स ऑफ फंड्स

बैलेंस्ड फंड का पिछले 10 साल का रिटर्न

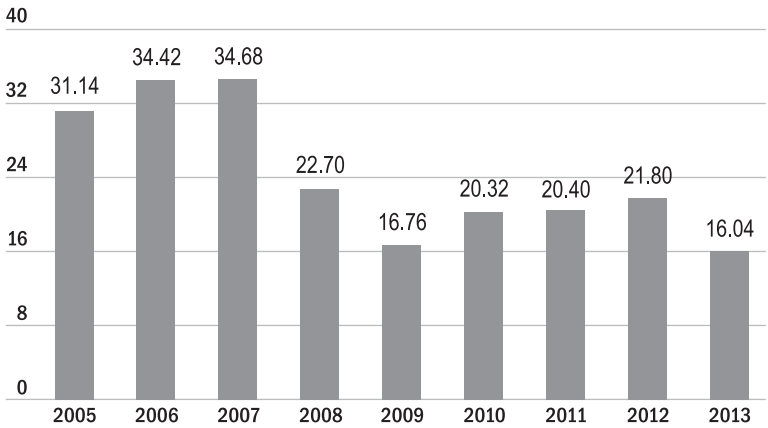

इक्विटी और डेट में निवेश के प्रबंधन के जरिए ये फंड को कर कुशल बना देते हैं

जो अंतरराष्ट्रीय निवेश के लिए कई तरह के फंड्स में निवेश करते हैं।

इनमें से कुछ योजनाओं का फोकस भौगोलिक होता है और कुछ अलग थीम जैसे कि खेतीबाड़ी या कमोडिटी में निवेश करते हैं। आपकी जरूरत के हिसाब से आप ये तय कर सकते हैं कि आप किस तरह का निवेश करना चाह रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय फंड्स में निवेश करते वक्त टैक्स के असर को जानना भी जरूरी है। जिन फंड्स का 65 फीसदी से कम निवेश घरेलू शेयर बाजार में निवेशित रहता है उसे डेट फंड की तरह देखा जाता है जिसका मतलब हुआ कि उन पर लंबी अवधि और लघु अवधि का टैक्स लगेगा।

इंडेक्स फंड्सः जैसा कि नाम से पता चलता है कि इंडेक्स फंड ऐसे म्यूचुअल फंड्स हैं जो किसी इंडेक्स के प्रदर्शन को परिलक्षित करते हैं। उदारहण के तौर पर ऐसे इंडेक्स फंड्स हैं जो सेंसेक्स अथवा निफ्टी के प्रदर्शन को परिलक्षित करते हैं।

सेक्टर फंड्सः जैसा कि नाम से पता चलता है कि ऐसे म्यूचुअल फंड्स जो ज्यादातर निवेश किसी खास सेक्टर में करते हैं। जैसे कि कई म्यूचुअल फंड्स ऐसे हैं जो एक ही सेक्टर में जैसे कि बैंकिग, एफएमसीजी या फार्मास्यूटिकल्स में निवेश करते हैं। ऐसे फंड्स का मकसद होता है कि वो निवेशकों को एक ऐसा विकल्प प्रदान करें जिससे वे ऐसे सेक्टर में निवेश कर सकें जहां विकास की संभावनाएं ज्यादा नजर आ रही हों।

थीम पर आधारित फंड्सः ये फंड्स किसी खास स्पष्ट दिखने वाले सेक्टर पर फोकस न रखकर निवेश की एक व्यापक थीम पर नजर रखते हैं। हालांकि भले ही कोई थीम एक सेक्टर से जरूर व्यापक हो जाए, इसका मतलब ये नहीं है कि ये सही अर्थों में विविधता वाला हो। कुछ थीम जो भारत में लांच किए गए हैं वो हैं ग्रामीण विकास, आर्थिक सुधार, अगली पीढ़ी (जेनेरेशन नेक्स्ट), शरिया फंड्स और यहां तक कि इंटरनेट पर आधारित फंड्स। जैसा कि नाम बताते हैं कि ये काफी व्यापक हैं।

विकास और टैक्स की बचत

म्यूचुअल फंड्स की एक ऐसी श्रेणी भी है जो न केवल विकास का रास्ता

ईएलएसएस का पिछले 10 साल का रिटर्न

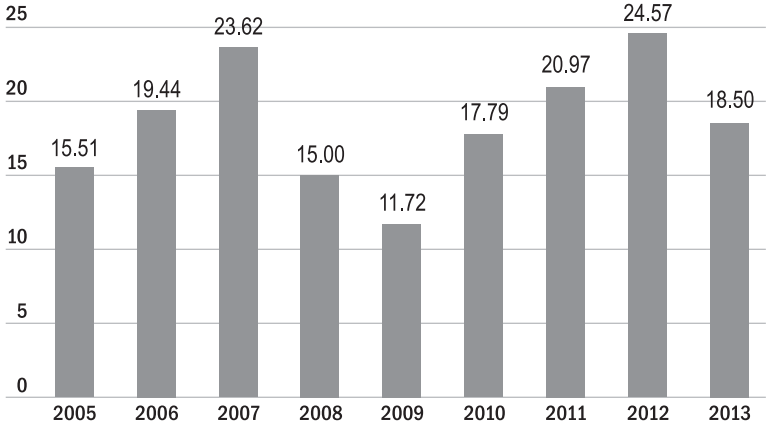

इस श्रेणी के फंड का प्रबंधन आम विविधता वाले फंड की ही तरह किया जाता है

खोलती है बल्कि निवेशकों पर आयकर का बोझ भी कम करती है। टैक्स बचत करने वाले इन फंड्स को ईएलएसएस भी कहा जाता है और टैक्स कानून के मुताबिक इनका नाम है इक्विटी लिंक्ड सेविंग स्कीम। ये सामान्य तौर पर इक्विटी फंड्स ही हैं जिनमें निवेश आयकर अधिनियम की धारा

ईएलएसएस का पिछले 5 साल का रिटर्न

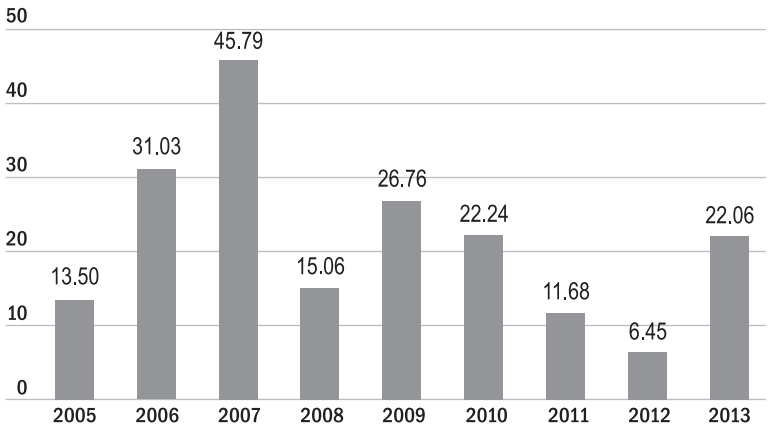

3 साल का लॉक–इन फंड प्रबंधक को बिना निकासी के दवाब के प्रबंधन का अवसर देता है

80 सी के तहत कर में छूट का हकदार है।

धारा 80 सी के तहत आप कई तरह के निवेश में 1 लाख रुपए तक की राशि को निवेश कर सकते हैं जिनमें ईएलएसएस भी एक जरिया है। चूंकि ये इक्विटी फंड्स हैं इनमें आपको लंबी अवधि के लिए निवेश करना चाहिए। लंबी अवधि का ये नजरिया जबरन आरोपित है चूंकि कर कानूनों के मुताबिक इन फंड्स में निवेश कम से कम तीन सालों के लिए लॉक रहता है। इस लॉक-इन नियम की वजह से निवेशकों को इन फंड्स से वाजिब रिटर्न मिलने की उम्मीद रहती है। इसके साथ ही कर में बचत रिटर्न को प्राकृतिक बढ़ावा देती है।

निवेश के लिए फंड्स के प्रकार: इक्विटी लिक्ड सेविंग स्कीम

टैक्स कुशल आमदनी

आय के लिए निवेश की जरूरत आम तौर पर उस वक्त पड़ती है जब आप अपने जीवन निर्वाह के लिए अपने निवेश का एक हिस्सा नियमित तौर पर निकालते हैं। सामान्य तौर पर अवकाश प्राप्त या फिर जिनकी कोई असल आय नहीं है वही ऐसा करते हैं।

आय के लिए निवेश धन इकठ्ठा करने के लिए निवेश से अलग है। सबसे पहले ये अनुमान योग्य होना चाहिए। जब काफी वक्त बाद के लिए धन इकठ्ठा किया जाना हो तो यह बात मायने नहीं रखती कि अलग-अलग वक्त में रिटर्न कम है या ज्यादा। लेकिन जब आपको नियमित तौर पर निकासी करनी हो तो यह असमानता अच्छी बात नहीं है।

दूसरा, ये अनुमानित रिटर्न मंहगाई दर के ज्यादा या कम से कम इसके आस पास तो होनी ही चाहिए। अगर रिटर्न की दर मंहगाई दर के आस पास नहीं है तो वास्तव में आपका पैसा अपनी कीमत खो रहा है, भले ही आप उसका उपयोग कर रहे हैं अथवा नहीं।

डेट फंड्स नियमित आय तो पैदा कर सकते हैं लेकिन आपको यह पता होना चाहिए कि उनका इस्तेमाल कैसे करना है

इनकम फंड्स का रिटर्न

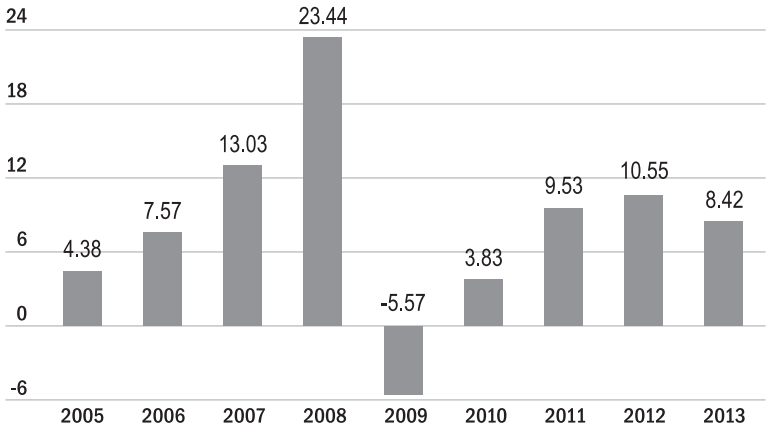

इनकम फंड्स ब्याज दरों में उतार–चढ़ाव का फायदा उठाते हैं

तीसरा, निवेश को तरल होना चाहिए। तरल होने का मतलब है कि इसका लॉक इन पीरियड ज्यादा नहीं होना चाहिए जिससे आप इसे नियमित तौर पर निकासी कर सकें।

ऐसे निवेश की संख्या ज्यादा नहीं है जो इन जरूरतों को पूरा करते हों। बचत खाता पहले और तीसरे बिन्दु पर खरा उतरता है। ये निश्चित तौर पर सुरक्षित है और अनुमान लगाने योग्य है। ये बहुत ज्यादा तरल भी है। लेकिन इसकी ब्याज दर काफी कम होती है। फिलहाल ज्यादातर बैंक 4 फीसदी का ब्याज अदा करते हैं और कुछ बैंक ऐसे हैं जो डिपॉजिट की बड़ी राशि पर थोड़ा ज्यादा, 6 फीसदी तक का रिटर्न अदा कर रहे हैं। बीते कुछ साल पहले बचत खाते पर दिए जाने वाले ब्याज की तुलना में निश्चित तौर पर ये आकर्षक है लेकिन मंहगाई की जो मार ग्राहकों को झेलनी होती है उसके ये आस पास भी नहीं ठहरते। बचत खाते में पड़े-पड़े आपका पैसा अपना वास्तविक मूल्य भी खोता जाता है और वक्त के साथ कम चीजें खरीद पाता है।

तो अब विकल्प के तौर पर बचते हैं डेट फंड्स। इनमें ऊपर दिए गए कोई अवगुण (कमियां) नहीं हैं। इस उद्देश्य के लिए लघु अवधि के डेट

फंड सबसे उपयुक्त हैं। डेट फंड्स अपने लक्ष्यों के मुताबिक लिक्विड फंड्स, शार्ट टर्म फंड्स, अल्ट्रा शार्ट टर्म फंड्स अथवा गिल्ट फंड्स हो सकते हैं। डेट फंड्स की दुनिया में इनकम फंड्स को इस श्रेणी से बाहर रखा गया है। इनकम फंड्स की कैटेगरी को मोटे तौर पर दो भागों में बांटा सकता है, पहले वे जो कॉरपोरेट डेट में दांव लगाते हैं और जिनकी डेट यील्ड ज्यादा होती है और दूसरे वो जो ब्याज दरों में उतार-चढ़ाव में मुनाफा बनाते हैं।

इस श्रेणी के फंड्स बॉन्ड्स, डिबेन्चर, सर्टिफिकेट ऑफ डिपॉजिट्स, कमर्शियल पेपर्स, सरकारी सिक्योरिटीज, पास थ्रू सिक्योरिटीज, कोलैटेरल आधारित डेट में निवेश करते हैं। तय आमदनी वाले निवेश के तरीकों और ब्याज दरों में विपरीत रिश्ता है। जब पूरी अर्थव्यवस्था में ब्याज दरो में बढ़त होती है तो बॉन्ड्स की कीमतों में गिरावट होती है और इसका उलटा भी सही है।

इन फंड्स में भी जबरदस्त तरलता होती है। आप किसी भी दिन अपना पैसा निकालने का आवेदन कर सकते हैं लेकिन निकासी में कम से कम 3 दिनों का वक्त लग जाता है। और रिटर्न बैंक डिपॉजिट की तुलना में बेहतर होता है। वास्तव में अगर आपका निवेश एक साल से ज्यादा हो गया

लघु अवधि के डेट फंड्स का रिटर्न

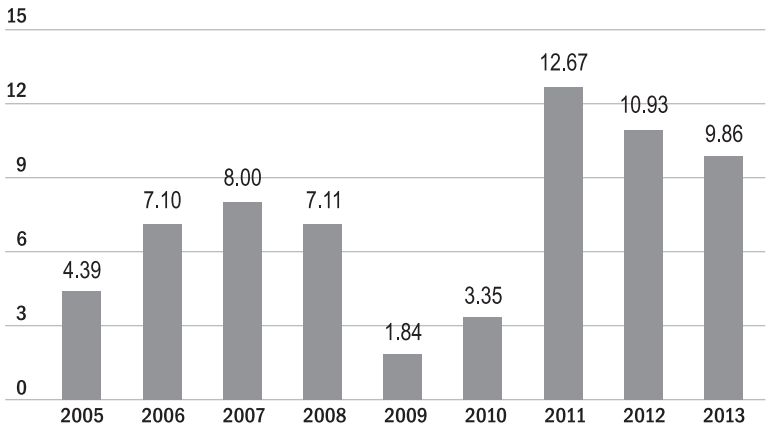

लघु अवधि के डेट और मनी मार्केट सिक्योरिटीज में निवेश के जरिए रिटर्न देना

है तो टैक्स कटने के बाद यहां आपको फिक्स्ड डिपॉजिट निवेश से बेहतर रिटर्न मिलता है। आमदनी के लिए किया गया निवेश जोखिम और रिटर्न के लिहाज से अनुमान लगाने योग्य होना चाहिए और उसमें तरलता भी होनी चाहिए। एक अच्छे निवेश में रिटर्न की दर मंहगाई की दर के न केवल बराबर होती है बल्कि इसे पार भी कर जाती है और फिर ये आय का दूसरा स्त्रोत बन पाती है। लंबी अवधि में डेट फंड्स बैंक डिपॉजिट की तुलना में नियमित आय का बेहतर स्त्रोत साबित हो सकता है।

निष्क्रिय पड़े बैंक बैलेंस पर रिटर्न को बढ़ाएं

अक्सर पैसा खोने के डर से बचने के लिए लोग अपने पैसे का बड़ा हिस्सा बचत खाते में जमा कर रखते हैं, जिस पर मिलने वाला रिटर्न बेहद कम होता है। डेट फंड्स, बैंक फिक्स्ड डिपॉजिट्स का सीधा और प्रतिस्पर्धी विकल्प हैं। दोनों में प्राथमिक अंतर सुरक्षा और टैक्स (यानि रिटर्न) के मामले में है, म्यूचुअल फंड्स होल्डिंग का लाभ जहां टैक्स रिटर्न में है वहीं फिक्स्ड डिपॉजिट सुरक्षित हैं।

म्युचूअल फंड्स की तरह डेट फंड्स में रिटर्न को लेकर कोई निश्चितता

लिक्विड फंड रिटर्न

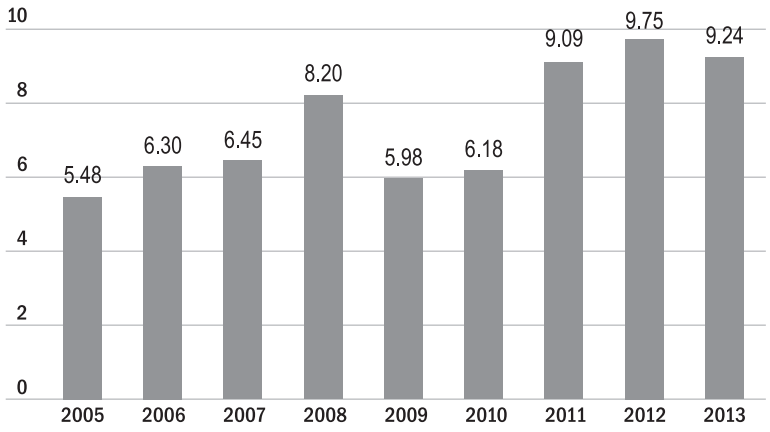

ऐसी योजना का चयन करें जो आपके निवेश की अवधि से मेल खाती है, जिसका ट्रैक रिकार्ड सही है और खर्च कम है

नहीं है। रिटर्न बाजार से जुड़े हैं और निवेशक ऐसे किसी भी खतरे की छाया में हैं जहां उन संस्थाओं को किसी भी नुकसान या क्रेडिट समस्या का सामना करना पड़ सकता है जिनके बॉन्ड्स में निवेश किया जाता है। हालांकि, यह म्यूचुअल फंड्स में आपके निवेश की सुरक्षा के लिए एक कानूनी व्याख्या है।

सबसे बड़ा अंतर कराधान या टैक्सेशन का होता है। बैंक फिक्सड डिपॉजिट्स से मिलने वाला रिटर्न ब्याज से होने वाली कमाई है और यह आपकी सामान्य आय में जुड़ी होनी चाहिए। क्योंकि, ज्यादातर निवेशक सबसे ऊंचे टैक्स स्लैब में होते हैं, यह रिटर्न को उतनी फीसदी घटा देता है। डेट फंड्स में रिटर्न 12 महीने या उससे ज्यादा अवधि के लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन टैक्स के तौर पर वर्गीकृत किए जाते हैं और इस वजह से इन पर इंडेक्सेशन के साथ 10 से 20 फीसदी टैक्स लगता है। अगर इंडेक्सेशन से होने वाले लाभ को ध्यान में रखा जाए, तब एफडी और डेट फंड से होने वाले रिटर्नस में बड़ा अंतर होता है। और अगर आप निवेश को इस तरह से करते हैं कि आपको 370 दिनों के फिक्स्ड मैच्योरिटी पर दोहरे इंडेक्सेशन का लाभ मिल जाए तो ये किसी बोनांजा से कम नहीं।

जिन डेट फंड्स में निवेश एक साल से कम के लिए किया जाता है उस पर आयकर स्लैब के हिसाब से शार्ट टर्म कैपिटल गेन टैक्स लगता है। लेकिन एक रणनीति है जिससे आप अपना टैक्स बचा सकते हैं। डेट अथवा लिक्विड फंड्स का लाभांश निवेशक के हाथ में टैक्स फ्री होता है जो इसे बैंक डिपॉजिट की तुलना में ज्यादा आकर्षक बना देता है। हालांकि डेट फंड योजनाओं को लाभांश के वितरण पर अतिरिक्त टैक्स अदा करना होता है। कर की ये दर 23.325 फीसदी (सरचार्ज और सेस मिलाकर) होती है, जब ये लाभांश किसी व्यक्ति अथवा अविभाजित हिन्दू परिवार को दिया जाता है और कर की दर 33.99 फीसदी (सरचार्ज और

डेट फंड्स एक बहु उपयोगी एसेट क्लास हैं जो एक निवेश पोर्टफोलियो में अलग–अलग भूमिका अदा कर सकते हैं

सेस मिलाकर) होती है जब ये लाभांश अन्य निवेशकों को दिया जाता है। पहले लिक्विड फंड्स पर डिविडेंड डिस्ट्रीब्यूशन टैक्स दूसरे डेट फंड्स की तुलना में कम होता था लेकिन अब ये बराबर हो गया है और इसलिए ये फायदा तो अब रहा नहीं।

जब आप लिक्विड फंड में निवेश कर रहे हैं तो डिविडेंड रीडिस्ट्रीब्यूशन का विकल्प चुनना चाहिए क्योंकि लाभांश को वापिस यूनिटें खरीदने में लगा दिया जाएगा जिसे नया निवेश माना जाता है। इस आधार पर कैपिटल गेन काफी कम होगा। अगर आप लिक्विड फंड में एक साल से अधिक पैसे रखने का इरादा रखते हैं तो आपको इंडेक्शेसन का फायदा लेने के लिए ग्रोथ विकल्प में निवेश करना चाहिए।

एफडी के स्मार्ट विकल्प

बैंक की सावधि जमा योजना का एक अच्छा विकल्प तय मैच्योरिटी वाली योजनाएँ (एफएमपी) हैं। ये निवेशकों द्वारा बैंक फिक्स्ड डिपॉजिट के विकल्प के तौर पर इस्तेमाल की जा सकती हैं। ये क्लोष्ड एंडेड फंड्स

बैंक डिपॉजिट की तुलना में एफएमपी

विवरण	बैंक सावधि जमा	इंडेक्सेशन के साथ एफएमपी	बिना इंडेक्सेशन के एफएमपी
निवेशित राशि (रुपयों में)	1,00,000	1,00,000	1,00,000
समयावधि (दिनों में)	372	372	372
सांकेतिक रिटर्न (%)	10	9	9
ब्याज सहित कुल राशि (रुपयों में)	1,10,191.8	1,09,172.6	1,10,191.8
ब्याज/लाभ (रुपयों में)	10,191.8	9,172.6	10,191.8
इंडेक्स्ड लागत (रुपयों में)	-	1,04,078.8	-
इंडेक्स्ड मुनाफा (रुपयों में)	-	5093.8	-
कर की दर (%)	30.90	22.66	11.33
कर की राशि (रुपयों में)	3,149.3	1,154.3	1,154.7
कर के बाद मुनाफा (रुपयों में)	7,042.5	8,018.3	9,037.0
कर के बाद रिटर्न (%)	7.04	8.02	9.04

सिस्टमैटिक तरीका

फंड्स में सीधे निवेश करने और अपना पैसा निकालने के अलावा आपके पैसे को सुनियोजित तरीके से निवेशित करने और निकासी करने के कुछ खास तरीके भी मौजूद हैं। ये तरीके आपको एक अनुशासित निवेशक बनने में काफी मदद करते हैं और आपके रिटर्न को भी बढ़ा देते हैं। नियमित निवेश का मतलब होता है कम जोखिम और ज्यादा रिटर्न। सुनियोजित निवेश योजनाएं इसे सरल और आसान बना देती हैं।

सुनियोजित निवेश योजना (एसआईपी)

किसी भी फंड में एक तय अंतराल पर एक तय राशि का नियमित निवेश एसआईपी कहलाता है। सामान्य तौर पर ये अंतराल मासिक होता है। म्यूचुअल फंड में निवेश से जो दो समस्याएं निवेशकों को सबसे बेहतर रिटर्न मिलने से रोकती हैं एसआईपी उनको हल कर देता है। पहला, चूंकि एसआईपी का मतलब ही एक तय अंतराल पर एक तय राशि का नियमित निवेश है, बाजार के स्तर या फिर एनएवी की परवाह किए बिना निवेशकों को अपने आप गिरते बाजार में ज्यादा यूनिटें मिल जाती हैं। ये उनकी औसत कीमत को कम कर देता है जिसका मतलब हुआ कि उन्हें ज्यादा रिटर्न मिलता है। निवेश का एक आधारभूत नियम है 'कम पर खरीदो और ज्यादा पर बेचो'। एसआईपी अपने आप ही इसे पक्का कर देता है।

अगर आप एक साथ बड़ी राशि का निवेश करते हैं तो हो सकता है कि आप ऐसा शेयर बाजार में बढ़ी हुई कीमतों पर कर रहे हों। इसका मतलब ये हुआ कि आप ऊंची एनएवी पर खरीददारी कर रहे हैं जो बाजार में गिरावट आते ही आपके रिटर्न को कम कर देगा। तो एसआईपी एक लंबी अवधि में औसत कीमत पर निवेश करने का एक अच्छा तरीका है।

दूसरी बात ये कि एसआईपी मनौवैज्ञानिक तौर पर भी आपको निवेश करने में मदद

होते हैं, जिसका मतलब हुआ कि आप लॉन्च किए जाने के वक्त ही इसमें प्रवेश कर सकते हैं और पहले से तय अवधि के बाद ही इससे निकासी संभव है।

चूंकि ये स्टॉक एक्सचेंज पर लिस्टेड होते हैं आप वक्त से पहले भी इनमें से निकल सकते हैं। लेकिन आपको इसकी कीमत कम मिलेगी

करते हैं। निवेशक पक्के तौर पर बाजार में उचित वक्त की तलाश करते हैं। जब बाजार में गिरावट हो रही होती है तो वे बेचते हैं और निवेश बिल्कुल नहीं करते। जब बाजार चढ़ रहा होता है तो वे ज्यादा निवेश करते हैं। वास्तव में इसका उलटा होना चाहिए। एक एसआईपी नियमित निवेश के जरिए इन तमाम चीजों पर अपने आप ही लगाम लगा देती है। ये इस बात का मानसिक बोझ ही खत्म कर देती है कि कब आपको निवेश करना है जिससे रिटर्न बेहतर हो सके।

अनुभवहीन निवेशकों के लिए ये अच्छा रिटर्न पाने के रास्ते में सबसे बड़ा रोड़ा है। निवेशक कम दाम पर खरीदते हैं जो आखिरकार उनको फायदा ही देता है।

सुनियोजित निकासी योजना (एसडब्ल्यूपी)

सुनियोजित निकासी योजना फंड से नियमित निकासी का तरीका है। इसमें कई तरह के विकल्प मौजूद हैं। निवेशक चाहे तो तय राशि की निकासी कर सकता है, तय यूनिटों की संख्या भुना सकता है या फिर एक सीमा के ऊपर का पूरा रिटर्न निकाल सकता है। दूसरी कई चीजों में ये फंड निवेश से नियमित आय कमाने का एक सरल तरीका है।

सुनियोजित अंतरण योजना (एसटीपी)

एसटीपी एक फंड से दूसरे फंड में अंतरण का सुनियोजित तरीका है। ये एक तरह की एसआईपी है लेकिन पैसे का स्रोत दूसरे फंड से एसटीपी होती है। एसटीपी का ज्यादातर इस्तेमाल तब होता है जब आपको एकमुश्त राशि इक्विटी फंड में लगानी होती है। ऊपर दिए गए कारणों की वजह से अचानक एकमुश्त निवेश की तुलना में एसआईपी के जरिए धीरे–धीरे निवेश हमेशा बेहतर होता है। ऐसे मामलों में आप एक एएमसी की डेट योजना में एकमुश्त राशि रख सकते हैं और एक चुने हुए इक्विटी फंड में हर माह एक तय राशि डालते जाइए। इसे ही एसटीपी कहते हैं।

क्योंकि आमतौर पर एनएवी की तुलना में एक्सचेंज पर कीमत कम होती है। हालांकि फंड हाउसेज एफएमपी पर अब सांकेतिक रिटर्न नहीं बता सकती लेकिन रिटर्न कमोबेश तुनलात्मक और कभी-कभी तो बैंक डिपॉजिट से भी बेहतर होते हैं।

एफएमपी डेट योजनाओं में निवेश करते हैं और उनमें मैच्योरिटी तक बने

रहते हैं। इसका मतलब ये हुआ कि बाजार में निवेश की कीमत में उतार-चढ़ाव के बावजूद अंतिम आमदनी का अनुमान लगाया जा सकता है।

एक स्पष्ट सवाल ये है कि निवेशकों को बैंक जमा योजनाओं की तुलना में एफएमपी को तरजीह क्यों देनी चाहिए? इसका जवाब कर कुशलता से ही जुड़ा हुआ है। जब भी आप अपना पैसा सावधि जमा योजना में लगाते हैं इसका ब्याज आपकी आमदनी से जोड़ दिया जाता है। एक साल से ज्यादा अवधि वाले एफएमपी पर अगर आप अपना सारा मुनाफा कैपिटल गेन की तरह ले जाना चाहते हैं तो इंडेक्सेशन के बिना 10 फीसदी और इंडेक्सेशन के साथ 20 फीसदी का टैक्स लगेगा। कर की दरों को देखते हुए ये व्यक्तिगत निवेशकों और कंपनियों के लिए काफी बचत करता है क्योंकि उन्हें बैंक जमा की ब्याज पर टैक्स देना होता है।

पूंजी की सुरक्षा

जो निवेशक अपनी पूंजी की सुरक्षा चाहते हैं उनके लिए फंड्स की एक नई श्रेणी है - कैपिटल प्रोटेक्शन फंड्स। ये आपको पूंजी की सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं देते लेकिन इनकी संरचना ऐसी होती है कि पूंजी सुरक्षित रहती है। पूंजी की सुरक्षा इनका लक्ष्य होता है, बाध्यता नहीं। बैंक जमा योजना की तुलना में टैक्स के मामले में ये फंड बाजी मार ले जाते है। अगर आप एक साल बाद इन फंड्स से पैसे निकालते हैं तो इंडेक्सेशन के बिना 10 फीसदी और इंडेक्सेशन के साथ 20 फीसदी का टैक्स लगेगा जबकि बैंक सावधि योजना के मामले में सर्वाधिक टैक्स स्लैब वाले निवेशकों के लिए 30 फीसदी का टैक्स स्रोत पर ही काट लिया जाता है।

अध्याय

4

म्यूचुअल फंड कैसे खरीदें

आपके पास म्युचअल फंड स्कीम खरीदने के कई तरीके हैं। लेकिन किसी भी म्यूचुअल फंड को खरीदने से पहले आपको कुछ जरूरी कागजी काम पूरा करना होता है। सही तरीके से कागजी काम पूरा करने से आप बिना किसी रुकावट के निवेश कर सकते हैं।

म्यूचुअल फंड खरीदने के लिए जरूरी चीजें

किसी भी म्यूचुअल फंड को खरीदने के लिए आपके पास पैन कार्ड, बैंक अकाउंट होना जरूरी है। इसके साथ ही अगर आपने केवाईसी (नो योर क्लाइंट प्रक्रिया) नहीं करवाया है तो भी आप म्यूचुअल फंड नहीं खरीद पाएंगे। बैंक अकाउंट निवेशक के नाम पर होना चाहिए और यह मैगनेटिक इंक कैरेक्टर रिकोगनिशन (एमआईसीआर) और इंडियन फाइनेंनशियल सिस्टम कोड (आईएफएससी) के ब्यौरे के साथ होना चाहिए। सभी चेक में यह ब्यौरे उपलब्ध रहते हैं। दरअसल इसकी जरुरत इसलिए होती है क्योंकि एजेंट या डिस्ट्रीब्यूटर म्यूचुअल फंड में निवेश से पहले आपसे एक कैंसेल्ड चेकलीफ मांगते हैं।

केवाईसी प्रक्रिया कैसे करवाएं?

दरअसल केवाईसी प्रक्रिया के जरिए निवेशक को बाजार नियामक संस्था

सेबी के मनी लॉन्डरिंग को रोकने वाले कानून यानि धनशोधन निरोध अधिनियम, 2002 ('पीएमएलए') के नियमों पर खरा उतरना होता है। हालांकि सरकार समय-समय पर इन नियमों में बदलाव करती रहती है।

निवेशकों को केवाईसी प्रक्रिया से घबराने की जरूरत नहीं है क्योंकि यह काफी सुविधाजनक है। दरअसल सेबी द्वारा नियंत्रित सिक्योरिटीज मार्केट की म्यूचुअल फंड, पोर्टफोलियो मैनेजर, डिपॉजिटिरी पार्टिसिपेंट्स, स्टॉक ब्रोकर्स, वेंचर कैपिटल फंड्स, कलेक्टिव इनवेस्टमेंट स्कीम्स जैसी सभी इंटरमीडीयरीज़ को केवाईसी नियमों का पालन करना होता है। इन सभी के लिए केवाईसी नियम एकसमान हैं। इस वजह से किसी एक इंटरमीडीयरीज़ के लिए केवाईसी प्रक्रिया कराने पर वह दूसरे इंटरमीडीयरीज़ के लिए भी काम आ जाती है। यानि निवेशकों को बार-बार केवाईसी प्रक्रिया से गुजरने के झंझट से छुटकारा मिल जाता है और निवेशक के लिए निवेश प्रक्रिया आसान हो जाती है।

केवाईसी एप्लीकेशन के साथ जमा किए जाने वाले दस्तावेज

- हाल ही में खीचीं गई पासपोर्ट साइज फोटो
- पहचान का प्रमाण जैसे कि पैन कार्ड की कॉपी या यूआईडी यानि आधार या पासपोर्ट या वोटर आईडी कार्ड या ड्राइविंग लाइसेंस की कॉपी
- आपके पते का प्रमाण जिसके लिए पासपोर्ट या ड्राइविंग लाइसेंस या राशन कार्ड या घर का पंजीकृत लीज़/बिक्री समझौता या हाल में निकलवाया गया बैंक अकाउंट का स्टेटमेंट या बैंक की पासबुक या टेलीफोन (केवल लैंडलाइन) का बिल या बिजली बिल या गैस बिल का इस्तेमाल कर सकते हैं। यह बिल तीन महीने से ज्यादा पुराने नहीं होने चाहिए।

आपको सत्यापन के लिए ऊपर बताए गए सभी दस्तावेजों की खुद के द्वारा प्रमाणित कॉपी जमा करनी पड़ेगी, दस्तावेजों की प्रमाणिकता सिद्ध करने

एक बार केवाईसी करवाने के बाद निवेशक अलग-अलग मध्यस्थों के लिए बार-बार केवाईसी प्रक्रिया करवाने के झंझट से बच जाता है। इससे निवेश प्रक्रिया को सरल करने में मदद मिलती है

के लिए आपको असल दस्तावेज भी दिखाने पड़ेंगे। किसी कारणवश अगर आप सत्यापन के समय असल दस्तावेज नहीं दिखा पाए तो फिर आपको जमा किए जाने वाले दस्तावेज की कॉपी को किसी ऐसे अधिकारी से प्रमाणित कराना होगा जिसे संबंधित दस्तावेज की प्रमाणिकता सिद्ध करने का अधिकार हो। अगर आप किन्हीं कारणों से सभी जरूरी दस्तावेज जमा नहीं कर पाए तो इससे आपको केवाईसी प्रमाणपत्र हासिल करने में देरी होगी।

भारतीय नागरिक निम्नलिखित लोगों से दस्तावेज प्रमाणित करवा सकते हैं: नोटरी पब्लिक, राजपत्रित अधिकारी, मल्टीनेशनल विदेशी बैंक या को-ऑपरेटिव बैंक, अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक का मैनेजर। प्रमाणित होने वाली कॉपी पर संबंधित अधिकारी का नाम, उसका पद और मुहर स्पष्ट होनी चाहिए।

एनआरआई इन लोगों से दस्तावेज प्रमाणित करा सकते हैं: भारत में पंजीकृत अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक का प्राधिकृत अधिकारी, नोटरी पब्लिक, कोर्ट मैजिस्ट्रेट, जज, आवेदक जिस देश में रह रहा है वहां के भारतीय दूतावास से भी दस्तावेज प्रमाणित करवाए जा सकते हैं।

आप अपना केवाईसी स्टेटस कैसे जांच सकते हैं?

मौजूदा निवेशक और केवाईसी के लिए आवेदन देने वाले निवेशक काफी आसानी से केवाईसी स्टेटस जान सकते हैं। निवेशक पैन कार्ड के जरिए केवाईसी रजिस्ट्रेशन एजेंसी पर अपनी स्थिति का पता लगा सकते हैं।

- www.cvlkra.com/
- https://kra-ndml-in/
- www.nsekra.com/
- https://camskra.com/
- www.karvykra.com/

निवेशक पैन कार्ड की मदद से किसी भी केवाईसी रजिस्ट्रेशन एजेंसी पर जाकर कभी भी अपने केवाईसी स्टेटस की जानकारी ले सकते हैं

अवयस्कों के लिए निवेश

अगर आप किसी अवयस्क के नाम पर निवेश करना चाहते हैं तो आपको थर्ड पार्टी घोषणा फॉर्म भरना होगा

- केवल माता–पिता ही अपने बच्चे के नाम पर निवेश कर सकते हैं
- माता–पिता को अपने बच्चे के साथ संबंध को प्रमाणित करने वाले दस्तावेज जमा करने पड़ेंगे (पासपोर्ट, जन्म प्रमाणपत्र या कोई दूसरा प्रमाण पत्र)
- अगर किसी दुर्घटना में बच्चे के माता–पिता की मृत्यु हो गई है तो कोर्ट के द्वारा नियुक्त अभिभावक बच्चे के नाम पर निवेश कर सकते हैं, जरूरत पड़ने पर अवयस्क बच्चे और उसके अभिभावक के बीच संबंध को स्थापित करने के लिए जरूरी दस्तावेज जमा किए जा सकते हैं

म्यूचुअल फंड एप्लीकेशन फॉर्म

हर म्यूचुअल फंड स्कीम का एक फॉर्म होता है और निवेशकों के लिए इसे भरना जरूरी होता है। अगर आपने सिस्टेमेटिक इनवेस्टमेंट प्लान यानि एसआईपी में निवेश शुरू किया है तो आपको दो फॉर्म भरने होंगे। पहले म्यूचुअल फंड के साथ अकाउंट खोलने के लिए फॉर्म भरना होगा, और दूसरे फॉर्म में एसआईपी से जुड़े ब्यौरे जैसे कि हर महीने जमा करने वाली रकम, रकम कितनी बार जमा की जाएगी, रकम जमा करने की तारीख का लेखाजोखा देना होगा।

ग्रोथ, डिविडेंड या डिविडेंड रीइन्वेस्टमेंट प्लान

आप म्यूचुअल फंड में तीन विकल्पों के तहत निवेश कर सकते हैं। ग्रोथ, डिविडेंड और डिविडेंड पुर्निवेश। निवेशकों को फॉर्म भरते समय इनमें से किसी एक विकल्प का चुनाव करना होता है, यदि आपने किसी विकल्प का चुनाव नहीं किया तो फंड हाउस स्कीम के बारे में जानकारी देने वाले

! जब कभी भी डिविडेंड देने का फैसला लिया जाता है, इस डिविडेंड का भुगतान आपके फंड की एनएवी से घटाकर ही आपको किया जाता है

दस्तावेज (एसआईडी) में दिए गए डिफॉल्ट ऑप्शन का चुनाव कर लेगा, ज्यादातर मामलों में यह ग्रोथ ऑप्शन ही होता है। निवेशक बाद की किसी तारीख में अपनी सुविधानुसार निवेश के विकल्प को बदल सकते हैं।

ग्रोथ का विकल्पः इस विकल्प में म्यूचुअल फंड स्कीम कोई डिविडेंड नहीं देती है बल्कि इसमें फंड लगातार बढ़ोत्तरी करता रहता है। इसलिए यूनिट धारक के तौर पर आप कुछ प्राप्त नहीं करते ऐसे में स्कीम में पुर्निवेश करने का सवाल ही नहीं उठता। जाहिर सी बात है कि अगर आपको कुछ मिलता है तभी आप उस रकम का दुबारा निवेश करते हैं। लेकिन इस मामले में ऐसा नहीं होता। हालांकि अगर फंड को अपनी होल्डिंग्स बेचने पर कुछ लाभ होता है तो इस रकम को निवेशकों को देने के बजाय दुबारा स्कीम में निवेशित कर दिया जाता है, निवेशक एनएवी देखकर इसका पता लगा सकते हैं क्योंकि रकम का निवेश करने के बाद एनएवी बढ़ जाती है। लेकिन निवेशकों की यूनिट्स की संख्या में कोई बदलाव नहीं आता।

डिविडेंड देने का विकल्पः इस विकल्प में म्यूचुअल फंड स्कीम मुनाफा होने पर एक निश्चित अंतराल पर इस मुनाफे का एक हिस्सा निवेशकों को देती है। डेट फंडों के मामले में यह हिस्सा हर महीने, हर तिमाही या 6 महीने में एक बार दिया जा सकता है जबकि इक्विटी फंड्स के मामले में इसको दिए जाने का समय निश्चित नहीं होता। किसी लिक्विड फंड में निवेशक को हर रोज या साप्ताहिक आधार पर भी डिविडेंड मिल सकता है। हालांकि निवेशकों को पता होना चाहिए कि डिविडेंड दिया जाना जरूरी नहीं होता, इसका मतलब है कि फंड हाउस निवेशक को हमेशा डिविडेंड देने के लिए बाध्य नहीं होते। यह डिविडेंड दे भी सकता है या नहीं भी।

डिविडेंड पुर्निवेशः इस विकल्प में निवेशकों को डिविडेंड का भुगतान नहीं किया जाता बल्कि डिविडेंड की रकम से और यूनिट्स खरीदकर उसी फंड में इसका निवेश कर दिया जाता है।

अगर आप लंबे समय का दायरा रखकर संपत्ति बनाने चाहते हैं तो आपके लिए ग्रोथ विकल्प सबसे बेहतर है

म्यूचुअल फंड से होने वाला कैपिटल गेन्स

निवेश का तरीका	छोटी अवधि का निवेश (एक साल से कम)	लंबी अवधि का निवेश (एक साल से ज्यादा)
इक्विटी और इक्विटी आधारित हाइब्रिड फंड्स	छोटी अवधि के कैपिटल गेन्स के तहत टैक्स लगेगा, फिलहाल यह 15% है	कोई टैक्स नहीं
अन्य फंड्स	निवेशक की आय के आधार पर टैक्स लगेगा	लंबी अवधि का कैपिटल गेन्स टैक्स लगेगा, हालांकि इसमें महंगाई को समायोजित किया जाएगा

फंड्स से होने वाली डिविडेंड आय

निवेश का तरीका	डिविडेंड टैक्स
इक्विटी और इक्विटी आधारित हाइब्रिड फंड्स	कोई टैक्स नहीं
अन्य फंड्स	25%*

*किसी व्यक्ति और एचयूएफ के लिए, मौजूदा सरचार्ज और 3 फीसदी शिक्षा उपकर

इन तीनों ही विकल्पों के अपने कुछ फायदे और नुकसान हैं। हालांकि यह आपकी जरूरत पर भी निर्भर करता है कि आप किस विकल्प का चुनाव करेंगे। निवेशक के नजरिए से देखें तो होने वाले फायदे का स्वरूप और इससे जुड़ी टैक्स देनदारी दो अहम पहलू हैं जिसके आधार पर इन विकल्पों में से किसी एक का चुनाव किया जा सकता है। लेकिन अगर एक निश्चित समय में इन तीनों विकल्पों से मिलने वाले रिटर्न पर नजर डाली जाए तो बहुत ज्यादा अंतर नहीं है। लेकिन इन्हें टैक्स मानकों के साथ देखने पर इनमें छुपे हुए अंतर नजर आ जाते हैं।

दरअसल ग्रोथ, डिविडेंड देने वाले और डिविडेंड पुर्निवेश विकल्पों को चुनने से पहले इनसे जुड़े टैक्स नियमों को जानना काफी अहम है क्योंकि इन पर मिलने वाले रिटर्न पर टैक्स लगाने के बाद इनसे जुड़ा रिटर्न बदल

डायरेक्ट प्लान्स के जरिए निवेशकों के पास अपने फंड से इसी तरह की स्कीम्स की तुलना में थोड़ा ज्यादा रिटर्न हासिल करने का अवसर होता है

जाता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि लंबी अवधि और छोटी अवधि के लिए निवेश करने पर अलग-अलग तरीके से टैक्स लगता है। इसके साथ ही इक्विटी और डेट फंड्स पर भी अलग तरीके से टैक्स लगता है।

फंड्स कहां से और कैसे खरीदें?

निवेशकों के पास बाजार में मौजूद म्यूचुअल फंड्स स्कीम्स में निवेश करने के कई तरीके हैं। निवेशक ऑनलाइन या ऑफलाइन या सीधे फंड हाउस से कोई भी प्लान खरीद सकते हैं। हर निवेश की तरह इन सभी विकल्पों के भी अपने फायदे और नुकसान हैं और निवेशक अपनी स्थिति के हिसाब से इनका चुनाव कर सकते हैं।

डायरेक्ट प्लानः सभी म्यूचुअल फंड्स हाउसेज ने 1 जनवरी 2013 से मौजूदा सभी फंड्स स्कीम्स के लिए एक नया प्लान शुरु किया है जिसे डायरेक्ट प्लान के नाम से जाना जाता है। यह प्लान ऐसे निवेशकों के लिए है जो किसी मध्यस्थ या डिस्ट्रीब्यूटर्स के जरिए निवेश नहीं करते हैं, इस स्थित में निवेशकों को एएमसी की मौजूदा फंड्स स्कीम्स के मुकाबले कम एक्सपेंस रेशो देना पड़ता है, यानि निवेशकों को इस स्कीम में कम फीस चुकानी पड़ती है।

इसका मतलब है कि निवेशकों को इस विकल्प का चुनाव करने पर इसी तरह के दूसरे विकल्पों की तुलना में थोड़ा ज्यादा रिटर्न मिलेगा क्योंकि निवेशक फंड के रखरखाव के लिए कम फीस दे रहे हैं। बाजार में मौजूद रेग्यूलर प्लान्स की तुलना में डायरेक्ट प्लान में कमीशन और डिस्ट्रीब्यूशन का खर्च बदला नहीं जाता है जिसके चलते इन स्कीम्स का सालाना रखरखाव खर्च कम हो जाता है और एनएवी की कीमत बढ़ जाती है।

मध्यस्थ के जरिएः बाजार में कई तरह के मध्यस्थ मौजूद हैं। इनमें अधिकतर बैंक, राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर मौजूद वितरण कंपनियां, कुछ

ऑनलाइन पोर्टल्स निवेशकों से अकाउंट खोलने के लिए एक शुरुआती रकम वसूलते हैं और इसके बाद निवेशक बिना किसी रुकावट के निवेश को जारी रख सकते हैं

स्टॉक ब्रोकर्स (इसमें ऑनलाइन ब्रोकर्स भी हैं) और बड़ी संख्या में व्यक्तिगत स्तर पर काम कर रहे लोग और छोटी वित्तीय सेवाएं देने वाली कंपनियां शामिल हैं। इन सभी मध्यस्थ संस्थाओं को एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड इन इंडिया (एएमएफआई) में पंजीकरण कराना जरूरी है। एएमएफआई की www.amfiindia.com वेबसाइट के जरिए आप मध्यस्थ संस्थाओं की मौजूदा स्थिति जान सकते हैं। इस वेबसाइट पर ऐसी मध्यस्थ संस्थाओं की जानकारी भी दी गई है जिन्हें गलत तरीके से काम करने के चलते प्रतिबंधित कर दिया गया है, इससे निवेशक ऐसी संस्थाओं के जरिए निवेश करने से बच जाएंगे। मध्यस्थ संस्थाएं निवेशकों को म्यूचुअल फंड फॉर्म उपलब्ध कराती हैं, इस फॉर्म को भरने में निवेशकों की मदद करती हैं, इस फॉर्म के साथ जरूरी दस्तावेज म्यूचुअल फंड ऑफिस में जमा करती है और कुछ मामलों में अकाउंट स्टेटमेंट को निवेशकों तक पहुंचाती है। हालांकि इन सभी सेवाओं के लिए निवेशकों को एक फीस चुकानी पड़ती है। ज्यादातर मामलों में एजेंट इन सेवाओं के लिए एक निश्चित रकम वसूलते हैं।

आईएफए के जरिए: आईएफए स्वतंत्र तौर पर वित्तीय सेवाएं देते हैं। आईएफए लोगों को म्यूचुअल फंड में निवेश बढ़ाने की सलाह देने वाले एजेंट के तौर पर काम करते हैं। यह निवेशकों को म्यूचुअल फंड फॉर्म भरने में मदद करने के अलावा इस फॉर्म को एएमसी में जमा करने में भी मदद करते हैं।

एएमसी से सीधे खरीदने का विकल्प: निवेशक एएमसी के जरिए किसी म्यूचुअल फंड स्कीम में सीधे निवेश कर सकते हैं। अगर आप किसी भी म्यूचुअल फंड में पहली बार निवेश कर रहे हैं तो आपको निवेश करने के लिए खुद एएमसी ऑफिस जाना पड़ेगा। हालांकि निवेशक भविष्य में इसी एएमसी की अलग-अलग म्यूचुअल फंड स्कीम्स में ऑनलाइन (हालांकि यह इस बात पर निर्भर करता है कि एएमसी ऑनलाइन सेवाएं दे रही है

! प्रत्येक मध्यस्थ के अपने कुछ फायदे और नुकसान हैं, इसलिए निवेशकों को अपनी जरुरत के हिसाब से मध्यस्थ का चुनाव करना चाहिए

Want to invest for your long term goals ???

Choose Equity Mutual Funds

Advantages of Equity Mutual Funds

Diversification: Instead of investing in an individual stock you get to invest in a basket of well-researched stocks

Affordability: You can start investing with a small amount and keep adding at your convenience

Ease of operations: In open-ended funds you can invest/redeem anytime online / offline or through your distributor. You may also select Direct Plans with lower expense ratios

Special features: Funds offer Systematic Investment Plan (SIP) / Systematic Transfer Plan (STP) to suit your needs & budget. Encourages the habit of regular savings & investing

Taxation: Long term capital gains if any (after holding for 12 months) are tax-free. Dividends are tax free

Wide range: Depending upon your preference & risk taking ability you can choose from Index funds / Diversified - large cap, mid cap, multi cap funds / Sector funds/ Theme based funds / Overseas funds etc. You may also choose between open-ended or close-ended funds

An Investor Education and Awareness Initiative by Taurus Mutual Fund

TAURUS Mutual Fund

Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully

Many *small* parts can make a whole.

INVEST THAT MONEY TO

REACH YOUR BIG GOAL.

SYSTEMATIC INVESTMENT PLAN (SIP)

Little by little, it can build up to a whole lot more. It all depends on fitting the small parts together with the right plan. SIP allows you to put aside fixed amounts at regular intervals over a pre-set term.

By cashing in on the power of compounding over a period, it rewards you for your disciplined & responsible approach.

Benefits of Systematic Investment Plan (SIP)

Allows you to invest small fixed sum of money at regular intervals - light on the wallet

SIP makes volatility work in your favour - reduces risk

Benefit of Rupee Cost Averaging - get more units at lower NAV, less units at higher NAV

Power of compounding comes into play - the early you start higher are the returns

Imparts time - tested discipline to investing - key to financial success

An Investor Education and Awareness Initiative by Taurus Mutual Fund

TAURUS Mutual Fund

Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully

या नहीं) या ऑफलाइन निवेश कर सकते हैं, निवेशक अपने नाम पर आवंटित फोलियो नंबर के जरिए यह निवेश कर पाएंगे। कुछ एएमसी निवेशकों को एप्लीकेशन फॉर्म भरने में मदद करने, संज्ञान भेजने और चेक लेने के लिए एजेंट भेजते हैं।

ऑनलाइन पोर्टल्स के जरिए: इस समय बाजार में थर्ड पार्टी के तौर पर कई ऑनलाइन पोर्टल्स मौजूद हैं, जिसके जरिए आप विभिन्न एएमसी की अलग-अलग म्यूचुअल फंड स्कीम्स में निवेश कर सकते हैं। इनमें से अधिकतर पोर्टल्स ने निवेश को सुविधाजनक बनाने और रकम के सही तरीके से ट्रांसफर के लिए बैंकों के साथ अनुबंध कर रखा है। यह पोर्टल्स अकाउंट खोलने, भविष्य में बिना किसी रुकावट के अकाउंट चलाने, निवेश करने और निवेशित रकम की वापसी के लिए फीस वसूलती हैं।

बैंक के जरिए: बैंक भी मध्यस्थ के तौर पर काम करते हैं। बैंक विभिन्न एएमसी की अलग-अलग म्यूचुअल फंड स्कीम्स का वितरण करते हैं। निवेशक अपनी मनपसंद स्कीम में अपनी बैंक ब्रांच के जरिए सीधे निवेश कर सकते हैं।

डीमैट और ऑनलाइन ट्रेडिंग अकाउंट के जरिए: अगर आपके पास डीमैट अकाउंट है तो आप इस अकाउंट के जरिए भी म्यूचुअल फंड स्कीम्स खरीद और बेच सकते हैं।

इलैक्ट्रॉनिक तरीके से रकम का ट्रांसफर

किसी एक बैंक से दूसरे बैंक में रकम ट्रांसफर के परंपरागत तरीके में आपको चेक लिखकर उसे बैंक में जमा करना पड़ता है। हालांकि तकनीक के विकास के साथ हम ऐसे मुकाम पर हैं कि जहां इन जटिल प्रक्रियाओं से बचा जा सकता है। पिछले कुछ सालों में आरबीआई ने कई ऐसे कदम उठाए हैं जिसके चलते रकम बिना किसी पेपर वर्क के इलैक्ट्रॉनिक तरीके

म्यूचुअल फंड में सिस्टमेटिक इनवेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए निवेश करने वाले निवेशकों के लिए ईसीएस सबसे ज्यादा उपयोगी विकल्प है

से एक अकाउंट से दूसरे अकाउंट में ट्रांसफर हो जाती है। हालांकि ऑनलाइन फंड ट्रांसफर करते समय या आरटीजीएस, एनआईएफटी और ईसीएस जैसे इलैक्ट्रॉनिक्स सिस्टम का इस्तेमाल करते समय आप कई शब्दों से रूबरू होंगे। इनमें से प्रत्येक की आपके निवेश को सही समय पर करने और निवेश में लगने वाले समय को कम करने में एक अहम भूमिका है। इनमें से प्रत्येक विकल्प आपके म्यूचुअल फंड में हुए निवेश को प्रभावित करता है। **इलैक्ट्रॉनिक क्लियरिंग सर्विसेज (ईसीएस):** ईसीएस ऐसे भुगतान करने या प्राप्त करने का इलैक्ट्रॉनिक तरीका है जो बार-बार और एक निश्चित समयावधि में किए जाते हैं। इसी कारण से ईसीएस एसआईपी के जरिए निवेश करने वालों के लिए एक बेहतर विकल्प है। ईसीएस बड़ी रकम का एक बैंक अकाउंट से दूसरे बैंक अकाउंट्स या इन अकाउंट्स से किसी एक बैंक अकाउंट में रकम ट्रांसफर की सुविधा देता है।

ईसीएस दो तरह के होते हैं- ईसीएस क्रेडिट और ईसीएस डेबिट। ईसीएस क्रेडिट के जरिए कोई संस्थान ईसीएस केंद्र के अधिकार क्षेत्र में आने वाले विभिन्न क्षेत्रों की बैंक ब्रांचों में बड़ी संख्या में खाता रखने वाले लाभार्थियों का पैसा उनके अकाउंट में ट्रांसफर करने में मदद करता है। इसके लिए ईसीएस यूजर संस्थान से एकमुश्त रकम निकालता है। ईसीएस क्रेडिट अपने ग्राहक संस्थानों द्वारा दिए जाने वाले डिविडेंड, ब्याज दर, सैलरी, पेंशन इत्यादि के भुगतान को सुनिश्चित करता है।

ईसीएस क्रेडिट के जरिए कोई संस्थान ईसीएस केंद्र के अधिकार क्षेत्र में

इलैक्ट्रॉनिक भुगतान

आईएफएससी या इंडियन फाइनेंशियल सिस्टम कोड एक अल्फा-न्यूमरिक कोड है, जो कि विशिष्ट तरीके से एनईएफटी सिस्टम में भाग लेने वाले बैंक ब्रांच की पहचान कर लेता है। यह 11 अंकों वाला कोड है जिसमें पहले 4 अल्फा अंक बैंक की पहचान बताते हैं जबकि आखिर के 6 अंक ब्रांच की पहचान बताते हैं। पांचवा अंक जीरो होता है। एनईएफटी सिस्टम आईएफएससी का इस्तेमाल प्रारंभिक या अंतिम बैंक या ब्रांच की पहचान करने और संबंधित बैंक या ब्रांच तक संदेश को सही तरीके से पहुंचाने में करता है।

आने वाले विभिन्न क्षेत्रों की बैंक ब्रांचों में बड़ी संख्या में खाता रखने वाले लाभार्थियों के बैंक अकाउंट से रकम की निकासी सुनिश्चित करता है। इसके तहत ईसीएस यूजर संस्थान के बैंक अकाउंट को एकमुश्त रकम देता है। ईसीएस डेबिट, म्यूचुअल फंड की एसआईपी के भुगतान में काफी मददगार है क्योंकि एसआईपी का भुगतान निश्चित अवधि पर बार-बार किया जाता है। साथ ही इसमे यूजर संस्थान को एक बड़ी संख्या में निवेशकों को भुगतान करना पड़ता है, ऐसे में ईसीएस क्रेडिट फायदेमंद साबित होता है।

नेशनल इलैक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर (एनईएफटी): यह एक राष्ट्रीय स्तर का भुगतान करने का तंत्र है, जो कि सीधे एक जगह से दूसरी जगह फंड ट्रांसफर की सुविधा देता है। इस स्कीम के तहत स्कीम में भागीदार कोई भी व्यक्ति, फर्म और कॉरपोरेट किसी भी बैंक ब्रांच से इलैक्ट्रानिक तरीके से देश में कहीं भी किसी भी बैंक में अकाउंट रखने वाले किसी भी व्यक्ति, फर्म और कॉरपोरेट को फंड ट्रांसफर कर सकता है। ऐसे व्यक्ति जिनका बैंक अकाउंट नही हैं (वॉक-इन कस्टमर) वह भी एनईएफटी से लैस ब्रांचों में एनईएफटी के द्वारा ही फंड ट्रांसफर करने के निर्देश के साथ रकम जमा (केवल 50,000 रुपये तक) कर सकते हैं। एनईएफटी घंटों के हिसाब से काम करता है, सप्ताहिक दिनों में सुबह 9 बजे से शाम 7 बजे तक 11 सेटलमेंट किए जाते हैं। जबकि शनिवार को सुबह 9 बजे से 1 बजे तक 5 सेटलमेंट किए जाते हैं।

इलैक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर (ईएफटी): यह बिना किसी पेपर वर्क के एक बैंक अकाउंट से दूसरे बैंक अकाउंट में रकम ट्रांसफर करने का तरीका है, जिसमें आपको चेक बुक का इस्तेमाल नहीं करना पड़ता। इस तरह के भुगतान बैंक एटीएम पर या क्रेडिट या डेबिट कार्ड के जरिए किए जाते हैं। आरबीआई-आईएफटी सिस्टम में आपको अपने बैंक को अपने बैंक अकाउंट से दूसरे बैंक अकाउंट में रकम ट्रांसफर करने का अधिकार देना पड़ता है।

फंड हाउस एक साल में एक निवेशक से एक म्यूचुअल फंड के लिए 20,000 रुपये कैश के तौर पर वसूल कर सकते हैं

दूसरे बैंक अकाउंट को लाभार्थी अकाउंट के नाम से जाता जाता है। इस सेवा का इस्तेमाल करने वाले किसी शहर के अंदर या एक शहर से दूसरे शहर किसी भी बैंक ब्रांच से किसी दूसरे बैंक की ब्रांच में रकम का ट्रांसफर कर सकते हैं। इस तरह के ट्रांसफर में आरबीआई रकम भेजने वाले और हासिल करने वाले बैंक के बीच मध्यस्थ के तौर पर काम करता है और फंड का ट्रांसफर करवाता है। इस विकल्प के इस्तेमाल में फंड्स रिसीवर के अकाउंट में उसी दिन या अधिकतम चार दिन के अंदर पहुंच जाते हैं। हालांकि फंड ट्रांसफर में लगने वाला समय इस बात पर निर्भर करता है कि ईएफटी निर्देश किस समय दिया गया और लाभार्थी का अकाउंट किस शहर में है। ज्यादातर ट्रांसफर के मामलों में दिन के पहले पखवाड़े में किए गए लेनदेन को दिन के दूसरे पखवाड़े में किए गए लेनेदेन पर वरीयता दी जाती है।

रियल टाइम ग्रॉस सेटलमेंट (आरटीजीएस): रियल टाइम ग्रॉस सेटलमेंट एक तरह का तुरंत फंड ट्रांसफर करने वाला तंत्र है, इसमें रकम का ट्रांसफर तुरंत होता है। इस तंत्र का इस्तेमाल करके आप अपने अकाउंट से किसी भी बैंक अकाउंट में दो घंटे के अंदर रकम का ट्रांसफर कर सकते हैं। हालांकि इस तंत्र में आप केवल एक लाख से ज्यादा की रकम का ही ट्रांसफर कर सकते हैं और 1 लाख से कम रकम का ट्रांसफर करने के लिए बैंक को ग्राहक को एनईएफटी सुविधा देनी पड़ती है। इसकी वजह यह है कि आरटीजीएस सुविधा का अधिकतर इस्तेमाल बड़ी रकम के ट्रांजैक्शन में किया जाता है। आरटीजीएस सुविधा केवल 3 बजे तक मिलती है और एक ही बैंक में फंड ट्रांसफर केवल शाम 5 बजे तक ही किया जा सकता है।

अध्याय
5

निवेश को ट्रैक करना

पिछले कई सालों में बाजार नियामक और दूसरी संस्थाओं ने कई ऐसे कदम उठाए हैं, जिन्होंने म्यूचुअल फंड में निवेश को सरल बनाया है। म्यूचुअल फंड्स में निवेश के बारे में काफी जानकारी उपलब्ध है, जिसे आसानी से हासिल किया जा सकता है और जिसके इस्तेमाल से निवेश का आनंद उठाया जा सकता है।

फंड का रंग

बाजार नियामक सेबी ने फंड्स के लेबल और कलर कोड्स का मानकीकरण कर दिया है, जिसकी मदद से निवेशक सही विकल्प का चुनाव कर सकते हैं। जोखिम के आधार पर कलर कोड्स बनाए गए हैं और इन्हें तीन कलर स्कीम्स में बांटा गया है- बहुत ज्यादा जोखिम वाले उत्पादों के लिए भूरा रंग, मध्यम श्रेणी के जोखिम उत्पादों के लिए पीला रंग और सबसे कम जोखिम वाले उत्पादों के लिए नीला रंग है। निवेश की जाने वाली रकम को आधार बनाकर इन रंगों का चुनाव किया गया है। कलर कोड के आधार पर सभी तरह के इक्विटी उत्पादों को बहुत ज्यादा जोखिम, अधिकतर डेट फंडों को सबसे कम जोखिम और सभी हाइब्रिड उत्पादों को (इक्विटी और डेट का मिश्रण) मध्यम श्रेणी के जोखिम वाले उत्पादों में बांटा गया है।

कलर कोड की मदद से निवेशक को यह जानने में मदद मिलती है कि कोई फंड हाउस किस तरह का निवेश कर रहा है और इसके साथ कितना जोखिम जुड़ा है। इस जानकारी की मदद से आप म्यूचुअल फंड बेचने वाले डिस्ट्रीब्यूटर्स या मध्यस्थ के साथ बातचीत के लिए जरूरी जानकारी जुटा पाएंगे, कलर कोड आपको किसी म्यूचुअल फंड की पहचान करने और उसमें निवेश करने में मदद करेगा। इससे आप अपनी जोखिम लेने की क्षमता के हिसाब से म्यूचुअल फंड का चुनाव कर सकते हैं। हालांकि कलर कोड जोखिम और आपकी जरुरत का पता लगाने की दिशा में पहला कदम हो सकते हैं लेकिन केवल इसके आधार पर किसी फंड स्कीम का चुनाव नहीं किया जाना चाहिए।

आजकल फंड स्कीम के उत्पाद से जुड़े ब्यौरे की जानकारी स्कीम इनफोरमेशन डॉक्यूमेंट (एसआईडी) के पहले पन्ने पर उपलब्ध रहती है। इसके अलावा इस जानकारी का लेबल संयुक्त आवेदन फॉर्म और विज्ञापनों में भी मौजूद रहता है। सेबी के मुताबिक उत्पाद की जानकारी का लेबल शुरुआती दौर में दिए जाने वाले मुख्य सूचना ज्ञापन (केआईएम), स्कीम सूचना दस्तावेज (एसआईडी) और कॉमन एप्लीकेशन में स्कीम के बारे में दिए जाने वाले शीर्षक के काफी नजदीक होना चाहिए, ताकि यह निवेशकों को सही तरह से दिख सके।

विवरण पत्र या ऑफर डॉक्यूमेंट क्या है?

सभी म्यूचुअल फंड स्कीम्स के लिए निवेशकों को विवरण पत्र या ऑफर डॉक्यूमेंट उपलब्ध कराना जरूरी होता है, इसमें फंड स्कीम्स से जुड़ा ब्यौरा जैसे कि इश्यू के आने की तारीख, निवेश का उद्देश्य और दूसरी तमाम जानकारियां मौजूद रहती हैं।

इश्यू आने की तारीख: यह बाजार में नए फंड ऑफर्स के आने और उसके

कलर कोड्स आपको किसी फंड से जुड़े जोखिम की शुरुआती जानकारी देते हैं

खत्म होने की तारीख है।

निवेश का उद्देश्यः इस भाग से म्यूचुअल फंड के किसी खास सिक्योरिटीज में निवेश करने का विस्तृत ब्यौरा मिलता है।

न्यूनतम निवेशः इस भाग में, म्यूचुअल फंड उस न्यूनतम रकम की जानकारी देता है जो निवेशक किसी नए फंड ऑफर में लगा सकते हैं, इसके साथ ही न्यूनतम रकम के अलावा इसके मल्टीपल में किए जाने वाले निवेश के बारे में भी जानकारी मिलती है।

निवेश की नीतिः ऑफर डॉक्यूमेंट फंड मैनेजर्स द्वारा अपनाई जाने वाली निवेश की रणनीति की जानकारी देता है। साथ ही इससे यह भी जानकारी मिलती है कि निवेश किस तरह का है और आपकी पूंजी को किस तरह अलग-अलग विकल्पों में निवेशित किया गया है।

जोखिम के कारकः ऑफर डॉक्यूमेंट में फंड से जुड़े जोखिम की जानकारी देना जरूरी होता है। आपको अलग-अलग तरह के जोखिमों के बीच के अंतर की जानकारी होनी चाहिए, हर फंड के साथ कुछ खास जोखिम क्यों जुड़े रहते हैं और यह जोखिम आपके पोर्टफोलियो पर किस तरह से असर डालते हैं।

मानदंडः कोई फंड अपने लिए एक मानदंड तय कर उसकी तुलना मे प्रदर्शन करता है। इस भाग से पता चलता है कि फंड का उसके द्वारा तय मानदंड की तुलना में प्रदर्शन कैसा रहा। इस भाग में दी गई जानकारी को सावधानी पूर्वक पढ़िए और खासकर बेंचमार्क में किन घटकों का इस्तेमाल किया गया है इस पर जरूर नजर डालिए।

फीस और खर्चेः ऑफर डॉक्यूमेंट में खर्चों का ब्यौरा देना पड़ता है, इसमें एंट्री और एक्जिट लोड, एक फंड से दूसरे फंड में जाने का शुल्क, साल में बार-बार होने वाले खर्चे, मैनेजमेंट फीस और निवेशकों को दी जाने वाली सेवा की लागत शामिल होती है। विवरण पत्र या प्रॉस्पेक्टस इन खर्चों का आपके फंड में किए गए निवेश पर पड़ने वाले असर की जानकारी भी देता है।

प्रोस्पैक्टस से आपको फंड स्कीम की फीस और अन्य खर्चों का पता चलता है

मुख्य कर्मचारी: इस भाग से फंड कंपनी के प्रबंधन के मुख्य कर्मचारियों की शिक्षा और पेशेवर अनुभव का ब्यौरा मिलता है, इसमें फंड मैनेजर और मुख्य कार्यकारी अधिकारी भी शामिल हैं।

लाभ बताने वाली जानकारी: म्यूचुअल फंड में निवेश से आप खासी टैक्स छूट ले सकते हैं। इसलिए किसी भी टैक्स छूट का फायदा लेने से पहले आपको मिलने वाले टैक्स लाभ की सही जानकारी लेना जरूरी है। सही जानकारी से आप अधिकतम टैक्स छूट का लाभ लेकर टैक्स लगने के बाद मिलने वाले रिटर्न को बढ़ा सकते हैं।

निवेशक को दी जाने वाली सेवाएं: इसमें दी जाने वाली सेवाओं का ब्यौरा होता है जिसमें निवेशकों की सुविधा के लिए म्यूचुअल फंड द्वारा डिविडेंड का अपने आप होने वाला पुर्निवेश, सिस्टमेटिक इनवेस्टमेंट और रकम निकासी संबंधित जानकारियों का ब्यौरा होता है।

स्कीम इन्फॉरमेशन डॉक्यूमेंट (एसआईडी) क्या है?

यह काफी विस्तृत मसौदा होता है। इसमें किसी निवेशक के लिए फंड में निवेश करने से पहले मालूम होने वाली जानकारियों का ब्यौरा होता है। लेकिन निवेश करने से पहले आप एएमसी और डिस्ट्रीब्यूटर्स से यह जानकारी जरूर लें कि क्या फंड स्कीम लॉन्च होने के बाद एसआईडी में दिए गए शुल्कों के अलावा कोई और शुल्क तो नहीं वसूला जाएगा क्योंकि कई बार खर्च के बढ़ जाने पर एसआईडी में बदलाव किया जाता है। इस तरह लगाए जाने वाले शुल्कों की जानकारी सेबी को भी दी जाती है और फिर इसे सभी यूनिट होल्डर्स तक पहुंचाया जाता है या नियमों के अनुसार इस जानकारी को अखबारों में विज्ञापन के माध्यम से भी निवेशकों तक पहुंचाया जा सकता है। निवेशक इसे म्यूचुअल फंड या इसके निवेशक सेवा केंद्र (आईएससी) या डिस्ट्रीब्यूटर्स से भी हासिल कर सकते हैं।

केआईएम, एसआईडी और फैक्ट शीट भी अहम दस्तावेज हैं क्योंकि इनसे आपको फंड के काम करने के तरीके और इसकी पारदर्शिता का पता चलता है

अतिरिक्त जानकारी का वक्तव्य
(Statement of Additional Information)

इस वक्तव्य से एएमसी के बारे में टैक्स और कानूनी मामलों के अलावा जानकारी मिलती है। एसएआई, एसआईडी का हिस्सा है और कोई स्कीम किस तरह से काम करेगी और इसे कैसे प्रबंधित किया जाएगा इसकी पूरी जानकारी लेने के लिए दोनों वक्तव्यों को अकेले नहीं बल्कि एक साथ मिलाकर पढ़ना चाहिए।

मुख्य जानकारी ज्ञापन (Key Information Memorandum) क्या है?

केआईएम में वह जानकारी होती है जो निवेशक किसी स्कीम में निवेश करने से पहले जानना चाहते हैं। कुछ हद तक यह एसआईडी का संक्षिप्त रुप होता है।

म्यूचुअल फंड फैक्ट शीट क्या है?

किसी फंड की फैक्ट शीट में उस फंड से संबंधित तमाम जानकारी होती है। यह निवेशकों को बताती है कि उनके पैसे का निवेश कहां किया जा रहा है और उनका निवेश कैसा प्रदर्शन कर रहा है।

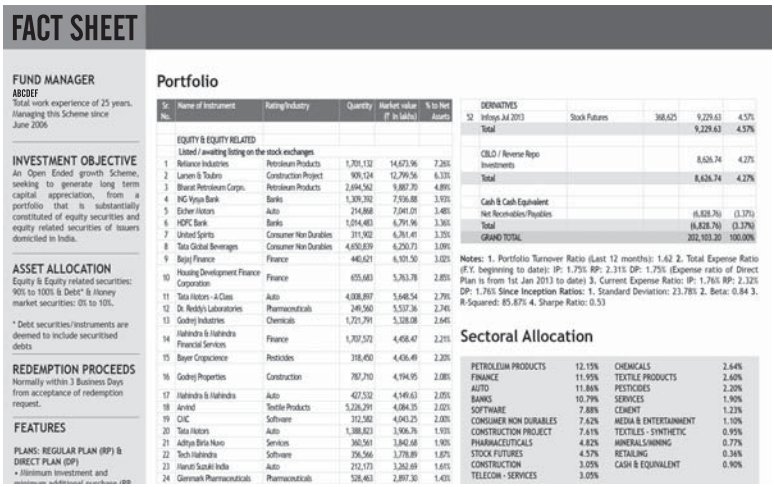

FACT SHEET

FUND MANAGER
ABCDEF
Total work experience of 25 years. Managing this Scheme since June 2006

INVESTMENT OBJECTIVE
An Open Ended growth Scheme, seeking to generate long term capital appreciation, from a portfolio that is substantially constituted of equity securities and equity related securities of issuers domiciled in India.

ASSET ALLOCATION
Equity & Equity related securities: 90% to 100% & Debt* & Money market securities: 0% to 10%.

* Debt securities/instruments are deemed to include securitised debts

REDEMPTION PROCEEDS
Normally within 3 Business Days from acceptance of redemption request.

FEATURES

PLANS: REGULAR PLAN (RP) & DIRECT PLAN (DP)
• Minimum investment and

Portfolio

Sr. No.	Name of Instrument	Rating/Industry	Quantity	Market value (₹ In lakhs)	% to Net Assets
	EQUITY & EQUITY RELATED				
	Listed / awaiting listing on the stock exchanges				
1	Reliance Industries	Petroleum Products	1,701,132	14,673.96	7.26%
2	Larsen & Toubro	Construction Project	909,124	12,799.56	6.33%
3	Bharat Petroleum Corpn.	Petroleum Products	2,694,562	9,887.70	4.89%
4	ING Vysya Bank	Banks	1,309,702	7,936.88	3.93%
5	Eicher Motors	Auto	214,868	7,041.01	3.48%
6	HDFC Bank	Banks	1,014,483	6,791.96	3.36%
7	United Spirits	Consumer Non Durables	311,902	6,761.41	3.35%
8	Tata Global Beverages	Consumer Non Durables	4,650,839	6,250.73	3.09%
9	Bajaj Finance	Finance	440,621	6,101.50	3.02%
10	Housing Development Finance Corporation	Finance	655,683	5,763.78	2.85%
11	Tata Motors - A Class	Auto	4,008,897	5,648.54	2.79%
12	Dr. Reddy's Laboratories	Pharmaceuticals	249,560	5,537.36	2.74%
13	Godrej Industries	Chemicals	1,721,791	5,328.08	2.64%
14	Mahindra & Mahindra Financial Services	Finance	1,707,572	4,458.47	2.21%
15	Bayer Cropscience	Pesticides	318,450	4,436.49	2.20%
16	Godrej Properties	Construction	787,710	4,194.95	2.08%
17	Mahindra & Mahindra	Auto	427,532	4,149.63	2.05%
18	Arvind	Textile Products	5,226,291	4,084.35	2.02%
19	CMC	Software	312,582	4,043.25	2.00%
20	Tata Motors	Auto	1,388,823	3,906.76	1.93%
21	Aditya Birla Nuvo	Services	360,561	3,842.68	1.90%
22	Tech Mahindra	Software	356,566	3,778.89	1.87%
23	Maruti Suzuki India	Auto	212,173	3,262.69	1.61%
24	Glenmark Pharmaceuticals	Pharmaceuticals	528,463	2,897.30	1.43%
	DERIVATIVES				
52	Infosys Jul 2013	Stock Futures	368,625	9,229.63	4.57%
	Total			9,229.63	4.57%
	CBLO / Reverse Repo Investments			8,626.74	4.27%
	Total			8,626.74	4.27%
	Cash & Cash Equivalent				
	Net Receivables/Payables			(6,828.76)	(3.37%)
	Total			(6,828.76)	(3.37%)
	GRAND TOTAL			202,103.20	100.00%

Notes: 1. Portfolio Turnover Ratio (Last 12 months): 1.62 2. Total Expense Ratio (F.Y. beginning to date): IP: 1.75% RP: 2.31% DP: 1.75% (Expense ratio of Direct Plan is from 1st Jan 2013 to date) 3. Current Expense Ratio: IP: 1.76% RP: 2.32% DP: 1.76% Since Inception Ratios: 1. Standard Deviation: 23.78% 2. Beta: 0.84 3. R-Squared: 85.87% 4. Sharpe Ratio: 0.53

Sectoral Allocation

PETROLEUM PRODUCTS	12.15%	CHEMICALS	2.64%
FINANCE	11.95%	TEXTILE PRODUCTS	2.60%
AUTO	11.86%	PESTICIDES	2.20%
BANKS	10.79%	SERVICES	1.90%
SOFTWARE	7.88%	CEMENT	1.23%
CONSUMER NON DURABLES	7.62%	MEDIA & ENTERTAINMENT	1.10%
CONSTRUCTION PROJECT	7.61%	TEXTILES - SYNTHETIC	0.95%
PHARMACEUTICALS	4.82%	MINERALS/MINING	0.77%
STOCK FUTURES	4.57%	RETAILING	0.36%
CONSTRUCTION	3.05%	CASH & EQUIVALENT	0.90%
TELECOM - SERVICES	3.05%		

एएमसी हर महीने फैक्ट शीट जारी करती है जिसमें फंड के निवेश का प्रदर्शन और पिछले महीने के निवेश के बारे में जानकारी दी जाती है। फैक्ट शीट के जरिए निवेशक यह फैसला ले सकते हैं कि क्या उन्हें इस स्कीम में निवेश करना चाहिए, पहले से निवेश कर रहे निवेशक फैसला ले सकते हैं कि क्या उन्हें अपना निवेश जारी रखना चाहिए या इसे बंद कर देना चाहिए।

एप्लीकेशन फॉर्म :

म्यूचुअल फंड एप्लीकेशन फॉर्म में वह सारा जरूरी ब्यौरा होता है जो कि किसी स्कीम में निवेश के लिए चुने गए निवेशक को निवेश करने से पहले देना पड़ता है। इस ब्यौरे में निवेशक का नाम, पता, निवेश की राशि और

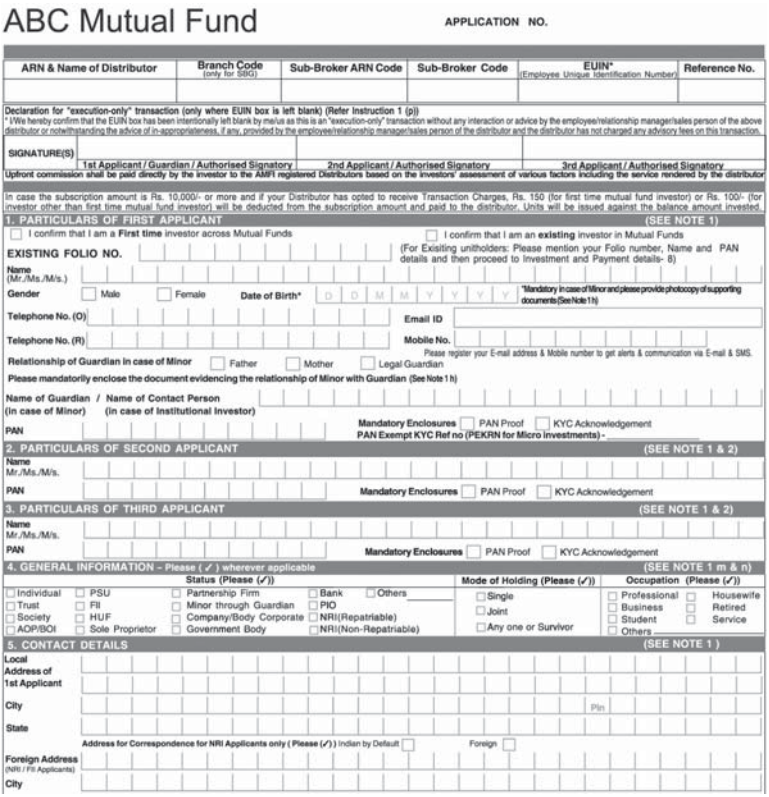

ABC Mutual Fund

APPLICATION NO.

ARN & Name of Distributor	Branch Code (only for SBG)	Sub-Broker ARN Code	Sub-Broker Code	EUIN* (Employee Unique Identification Number)	Reference No.

Declaration for "execution-only" transaction (only where EUIN box is left blank) (Refer Instruction 1 (p))
* I/We hereby confirm that the EUIN box has been intentionally left blank by me/us as this is an "execution-only" transaction without any interaction or advice by the employee/relationship manager/sales person of the above distributor or notwithstanding the advice of in-appropriateness, if any, provided by the employee/relationship manager/sales person of the distributor and the distributor has not charged any advisory fees on this transaction.

SIGNATURE(S) | 1st Applicant / Guardian / Authorised Signatory | 2nd Applicant / Authorised Signatory | 3rd Applicant / Authorised Signatory

Upfront commission shall be paid directly by the investor to the AMFI registered Distributors based on the investors' assessment of various factors including the service rendered by the distributor

In case the subscription amount is Rs. 10,000/- or more and if your Distributor has opted to receive Transaction Charges, Rs. 150 (for first time mutual fund investor) or Rs. 100/- (for investor other than first time mutual fund investor) will be deducted from the subscription amount and paid to the distributor. Units will be issued against the balance amount invested.

1. PARTICULARS OF FIRST APPLICANT (SEE NOTE 1)

☐ I confirm that I am a **First time** investor across Mutual Funds ☐ I confirm that I am an **existing** investor in Mutual Funds

EXISTING FOLIO NO. (For Exisiting unitholders: Please mention your Folio number, Name and PAN details and then proceed to Investment and Payment details- 8)

Name (Mr./Ms./M/s.)

Gender ☐ Male ☐ Female Date of Birth* D D M M Y Y Y Y *Mandatory in case of Minor and please provide photocopy of supporting documents (See Note 1 h)

Telephone No. (O) Email ID

Telephone No. (R) Mobile No.

Please register your E-mail address & Mobile number to get alerts & communication via E-mail & SMS.

Relationship of Guardian in case of Minor ☐ Father ☐ Mother ☐ Legal Guardian

Please mandatorily enclose the document evidencing the relationship of Minor with Guardian (See Note 1 h)

Name of Guardian / Name of Contact Person (in case of Minor) (in case of Institutional Investor)

PAN Mandatory Enclosures ☐ PAN Proof ☐ KYC Acknowledgement

PAN Exempt KYC Ref no (PEKRN for Micro Investments) -

2. PARTICULARS OF SECOND APPLICANT (SEE NOTE 1 & 2)

Name Mr./Ms./M/s.

PAN Mandatory Enclosures ☐ PAN Proof ☐ KYC Acknowledgement

3. PARTICULARS OF THIRD APPLICANT (SEE NOTE 1 & 2)

Name Mr./Ms./M/s.

PAN Mandatory Enclosures ☐ PAN Proof ☐ KYC Acknowledgement

4. GENERAL INFORMATION – Please (✓) wherever applicable (SEE NOTE 1 m & n)

Status (Please (✓))				Mode of Holding (Please (✓))	Occupation (Please (✓))	
☐ Individual	☐ PSU	☐ Partnership Firm	☐ Bank ☐ Others	☐ Single	☐ Professional	☐ Housewife
☐ Trust	☐ FII	☐ Minor through Guardian	☐ PIO	☐ Joint	☐ Business	☐ Retired
☐ Society	☐ HUF	☐ Company/Body Corporate	☐ NRI(Repatriable)	☐ Any one or Survivor	☐ Student	☐ Service
☐ AOP/BOI	☐ Sole Proprietor	☐ Government Body	☐ NRI(Non-Repatriable)		☐ Others	

5. CONTACT DETAILS (SEE NOTE 1)

Local Address of 1st Applicant

City Pin

State

Address for Correspondence for NRI Applicants only (Please (✓)) Indian by Default ☐ Foreign ☐

Foreign Address (NRI / FII Applicants)

City

एप्लीकेशन फॉर्म में देने के लिए जरूरी इस तरह की दूसरी जानकारियां शामिल होती हैं। बैंक अकाउंट का ब्यौरा और पैन कार्ड की जानकारी भी देनी पड़ती है।

निवेशकों को दी जाने वाली अन्य सेवाएं

म्यूचुअल फंड निवेशक के तौर पर आप अपने निवेश में बदलाव के बारे में सोच सकते हैं। उदाहरण के तौर पर आप समय से पहले एसआईपी खत्म करने और निवेश को वापस लेने का फैसला ले सकते हैं। समय के साथ आपने अपना घर बदला है और आप अपने अकाउंट में नये घर का पता देना चाहते हैं या आपने अपना बैंक बदला है, निवेशकों की इस तरह की कई समस्याएं हो सकती हैं। प्रत्येंक एएमसी इस तरह के बदलावों को करने की सुविधा देती है और हर तरह के बदलावों को करने के लिए अलग-अलग फॉर्म्स मौजूद हैं। आपको अपनी जरूरत के हिसाब से फॉर्म भरकर इसे अपने डिस्ट्रीब्यूटर्स या निवेशक सेवा केंद्र (आईएससी) में जमा करना पड़ता है, इसके साथ ही इन बदलावों को समायोजित कर लिया जाता है।

मैं अपनी शिकायतों का निपटारा कैसे करूं?

प्रत्येक एएमसी स्कीम के ऑफर डॉक्यूमेंट में उस व्यक्ति का नाम देती है जिसे निवेशक अपनी शिकायतों के निपटारे के लिए संपर्क कर सकते हैं। इसके अलावा ऑफर डॉक्यूमेंट में म्यूचुअल फंड के ट्रस्टीज का ब्यौरा और एएमसी के निदेशकों और ट्रस्टीज का नाम भी दिया जाता है। आप http.//investor.sebi.gov.in/ वेबसाइट पर सेबी के पास भी अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं। शिकायत मिलने पर सेबी संबंधित म्यूचुअल फंड के पास मामले को ले जाती है और मामले का निपटारा नहीं होने तक इस पर नजर रखती है।

म्यूचुअल फंड्स की सूची

Name of the Asset Management Co.	Website	Customer Care e-mai l ID	Toll free No.
Axis Asset Management	www.axismf.com	customerservice@axismf.com	1800 3000 3300
Baroda Pioneer Asset Management	www.barodapioneer.in	info@barodapioneer.in	1 - 800 – 419091
Birla Sun Life Asset Management	www..birlasunlife.com		1-800-270-7000
BNP Paribas Asset Management	www.bnpparibasmf.in	customer.care@bnpparibasmf.in	
BOI AXA Investment Managers	www.boiaxa-im.com	service@boiaxa-im.com	1800-103-2263
Canara Robeco Asset Management	www.canararobeco.com	crmf@canararobeco.com	1800-209-2726
Daiwa Asset Management (India)	www.daiwafunds.in	investorcare@daiwafunds.in	1 800 419 5000
Deutsche Asset Management (India)	www.dws-india.com	dws.mutual@db.com	
DSP BlackRock Investment Managers	www.dspblackrock.com	service@dspblackrock.com	1800-200-4499
Edelweiss Asset Management	www.edelweissmf.com	EMFHelp@edelweissfin.com	1800 425 0090
Escorts Asset Management	www.escortsmutual.com	help@escortsmutual.com	
Franklin Templeton Asset Mgmt. (India)	www.franklintempletonindia.com	service@templeton.com	1800-425-4255
Goldman Sachs Asset Mgmt. (India)	www.gsam.in	gsamindia@gs.com	1800-266-1220
HDFC Asset Management	www.hdfcfund.com	cliser@hdfcfund.com.	1800-3010-6767
HSBC Asset Management (India)	www.assetmanagement.hsbc.com/in	hsbcmf@hsbc.co.in	1800 200 2434
ICICI Prudential Asset Management	www.icicipruamc.com	enquiry@icicipruamc.com	1800 200 6666
IDBI Asset Management	www.idbimutual.co.in	contactus@idbimutual.co.in	1800-22-4324
IDFC Asset Management	www.idfcmf.com	investormf@idfc.com	1-800-2666688
IL&FS Infra Asset Management	www.ilfsinfrafund.com		
India Infoline Asset Management	www.iiflmf.com	service@iiflmf.com	1800-200-2267
Indiabulls Asset Management	www.indiabullsmf.com	customercare@indiabullsmf.com	1800 200 7777
ING Investment Management (India)	www.ingim.co.in	information@in.ing.com	18004255433
JM Financial Asset Management	www.jmfinancialmf.com	investor@jmfl.com	1800 1038 345

Name of the Asset Management Co.	Website	Customer Care e-mai l ID	Toll free No.
JPMorgan Asset Management	www.jpmorganmf.com	India.Investors@jpmorgan.com	1-800-200-5763
Kotak Mahindra Asset Management	www.kotakmutual.com	mutual@kotak.com	1800222626
L&T Investment Management	www.lntmf.com	investor.line@lntmf.co.in	1800 2000 400
LIC NOMURA Mutual Fund Asset Management	www.licnomuramf.com	corp.office@licnomuramf.com redressal@licnomuramf.com	1800-258-5678
Mirae Asset Global Investments (India)	www.miraeassetmf.co.in	customercare@miraeasset.com	1800-1020-777
Morgan Stanley Investment Management	www.morganstanley.com/indiamf	msmfcustomercare@karvy.com	1800 425 1313
Motilal Oswal Asset Management	www.motilaloswal.com/assetmanagement/	query@motilaloswal.com	
Peerless Funds Management	www.peerlessmf.co.in	pfmc@peerless.co.in	
PineBridge Investments Asset Management	www.pinebridge.in	india.investorcare@pinebridge.com	1800-200-3444
PPFAS Asset Management	www.amc.ppfas.com	ppfasmf@ppfas.com	
Pramerica Asset Managers	www.pramericamf.com	customercare@pramericamf.com	1-800-266-2667
Principal Pnb Asset Management	www.principalindia.com	customer@principalindia.com	1800 425 5600
Quantum Asset Management	www.QuantumAMC.com	Customercare@QuantumAMC.com	1800 22 3863 or 1800 209 3863
Reliance Capital Asset Management	www.reliancemutual.com	customer_care@reliancemutual.com	1800-300-11111
Religare Invesco Asset Management	www.religareinvesco.com	msfservices@religareinvesco.com	1-800-209-0007
Sahara Asset Management	www.saharamutual.com	saharamutual@saharamutual.com	
SBI Funds Management	www.sbimf.com	partnerforlife@sbimf.com	1800 425 5425
SREI Mutual Fund Asset Management		mfinvestorservices@srei.com	
Sundaram Asset Management	www.sundarammutual.com	customerservices@sundarammutual.com	1800 103 7237
Tata Asset Management	www.tatamutualfund.com		1800-209-0101
Taurus Asset Management	www.taurusmutualfund.com	customercare@taurusmutualfund.com	1800 108 1111
Union KBC Asset Management	www.unionkbc.com	investorcare@unionkbc.com	18002002268
UTI Asset Management	www.utimf.com	invest@uti.co.in , service@uti.co.in	1800 22 1230

अध्याय

6

आपका पहला फंड

आप पहली बार जिस फंड में निवेश कर रहे हैं वह कुछ अहम मानकों पर खरा उतरना चाहिए। फंड आपके लिए उपयोगी, समझ में आने वाला, सरल होना चाहिए, साथ ही उसमें निवेश करना आसान होना चाहिए। इक्विटी फंड यानि शेयर बाजार में निवेश करने वाले फंड ऐसे ही फंड हैं जो इन मानकों पर खरे उतरते हैं खासकर अगर आप पहली बार म्यूचुअल फंड में निवेश कर रहे हैं।

टैक्स बचाने वाले फंड: इक्विटी लिंक्ड सेंविग्स स्कीम यानि ईएलएसएस में निवेश करने पर आयकर की धारा 80सी के तहत टैक्स में छूट मिलती है। 80सी के तहत आपको कुछ तय प्रोडक्ट्स में एक लाख रुपये तक का निवेश करने पर टैक्स छूट मिलती है, और ईएलएसएस फंड्स इन्हीं प्रोडक्ट्स में शामिल हैं। हालांकि इनमें तीन साल का लॉक-इन पीरियड है यानि निवेश करने के बाद आप तीन साल तक अपनी रकम निकाल नहीं सकते। लेकिन इस लॉक-इन पीरियड के भी अपने फायदे हैं इससे न केवल आपकी पूंजी बढ़ती है बल्कि आप टैक्स की बचत भी करते हैं।

मंथली इनकम प्लान (एमआईपी): एमआईपी उन निवेशकों के लिए है जो कम जोखिम लेना चाहते हैं। निवेशकों के निवेश की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए इन फंड्स में कुल निवेशित रकम की छोटी राशि का

ही इक्विटी में निवेश किया जाता है, जबकि बाकी राशि डेट में निवेश की जाती है। ये फंड्स ऐसे निवेशकों के लिए अच्छा विकल्प हैं जो कम जोखिम और बेहतर रिटर्न के साथ हर महीने एक निश्चित आय चाहते हैं। बाजार में कुछ ऐसे एमआईपी प्लान्स भी हैं जो इक्विटी, और डेट फंडों के साथ ही सीमित मात्रा में सोने में निवेश का विकल्प भी देते हैं।

अन्य विकल्पः आप एसएंडपी बीएसई या सीएनएक्स निफ्टी पर आधारित इंडेक्स फंड में भी निवेश कर सकते हैं। इसके अलावा लार्ज कैप कंपनियों के शेयरों पर आधारित डायवर्सीफाइड इक्विटी फंड में भी निवेश किया जा सकता है। अगर आपके पास अतिरिक्त रकम है और आप छोटी अवधि के लिए निवेश करना चाहते हैं तो किसी लिक्विड फंड में भी निवेश कर सकते हैं।

डिस्क्लेमरः म्यूचुअल फंड में निवेश बाजार में होने वाले जोखिम से जुड़े हैं इसलिए किसी भी स्कीम में निवेश करने से पहले संबंधित स्कीम के बारे में पूरी जानकारी हासिल कर लें।

Disclaimer: Mutual fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully.

An Investor Education and Awareness Initiative by Taurus Mutual Fund

TAURUS
Mutual Fund

www.taurusmutualfund.com

Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully

TAURUS
Mutual Fund

की ओर से निवेशकों को शिक्षित करने की पहल